अनन्त जीवन के अद्भुत शब्द

Steve Flatt
Wonderful Words

अनन्त जीवन के अद्भुत शब्द

प्रायश्चित करना

मुझे पूछने से शुरू करें, क्या आप कर्ज में हैं? हम में से अधिकांश हैं। मुझे इसे दोबारा वाक्यांश दें। क्या आप या आप कभी अपने सिर पर कर्ज में डूबे हुए हैं? आप में से कुछ लोगों को घुटन महसूस हो सकती है क्योंकि आप पर जितना कर्ज है, वह आपकी सहन क्षमता से अधिक है। शायद आप अपने बंधक, दूसरे बंधक, कार भुगतान, छात्र ऋण और उन सभी क्रेडिट कार्डों के बारे में सोच रहे हैं जो ढेर हो गए हैं। आपको अचानक यह एहसास होने लगा है कि आपकी आमदनी खर्च के बराबर नहीं है और दिवालियापन आपके सामने खड़ा हो सकता है। वाह!

अब यह पाठ शारीरिक ऋणग्रस्तता के बारे में नहीं है। लेकिन अगर आप कर्ज में डूबे हुए हैं या रहे हैं, तो आप अपने दिल में इस पाठ की प्रकृति की बेहतर सराहना करेंगे।

प्रायश्चित उन सूखे पुराने धूल भरे प्रचारक शब्दों की छवि ला सकता है। अगर आप चर्च गए ही हैं, तो आपने शायद कहीं प्रचारकों को खड़े होकर प्रायश्चित के बारे में बात करते सुना होगा। हो सकता है कि आपने इसका मतलब सुना हो, लेकिन आप भूल गए हैं और आप नहीं जानते कि आप वास्तव में फिर से जानना चाहते हैं। प्रायश्चित एक अद्भुत शब्द है जिसे आप और मेरे पास समझने का विलास भी नहीं है, अगर हम ईसाई हैं। यह एक ऐसा शब्द है जो हमारे जीवन की नियति को आकार देता है और प्रकट करता है।

इसका मतलब क्या है? शब्दकोश इसकी धर्मनिरपेक्ष परिभाषा प्रदान करता है; एक जरूरत की आपूर्ति या एक कमी को बहाल करने के लिए। दिलचस्प रूप से पर्याप्त है, नए नियम के लेखन में उपयोग किए गए यूनानी शब्द का अर्थ ऋण का भुगतान करना और विशेष रूप से उस ऋण का भुगतान करना है जिसे एक व्यक्ति चुकाने में असमर्थ होगा। यदि तुम ऐसा करते तो तुम ऋण का प्रायश्चित कर लेते। वित्तीय ऋणग्रस्तता के बारे में थोड़ा सा परिचय देने का यही कारण है। लेकिन बाइबल में इस्तेमाल किए गए प्रायश्चित का वित्तीय ऋणग्रस्तता से कोई लेना-देना नहीं है। इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण कुछ है।

परमेश्वर प्रत्येक मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाता है। (उत्पत्ति 1:27) वह हम में से प्रत्येक को पूरी तरह से निष्कलंक, पवित्र और पाप रहित बनाता है। आप में से कुछ लोगों ने प्रस्तावित मूल पाप के सिद्धांत को सुना है। यह विचार है कि जब एक बच्चा अपनी माँ के गर्भ से आता है तो वह पहले ही पाप कर चुका होता है क्योंकि उसके माता-पिता के पाप होते हैं। इसकी पुष्टि करने के लिए बाइबल में कुछ भी नहीं है। इसके बजाय यीशु ने लूका 18 में चेलों से कहा कि छोटे बच्चों को आकर अपने आसपास रहने दो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसा ही है। वे पापी नहीं हैं। वे निर्दोष और अद्भुत और स्वच्छ हैं। परमेश्वर वास्तव में हमें अपने स्वरूप में कई तरीकों से बनाता है, एक तरह से हम शुद्ध हैं और पाप के दाग से रहित हैं। लेकिन जैसे-जैसे हम बड़े और परिपक्व होते जाते हैं, एक-एक करके, बार-बार, हम पाप करना चुनते हैं। जिस यूनानी शब्द का अनुवाद पाप किया गया है उसका अर्थ निशाने से चूक जाना है। यह अक्सर एक तीरंदाजी शब्द के रूप में प्रयोग किया जाता था। अगर कोई सांड की आंख पर निशाना लगा रहा था और तीर थोड़ा सा ही केंद्र से हट गया, तो वह व्यक्ति निशाने से चूक गया। यह पाप का विचार है। जब मैं अपने जीवन के लिए परमेश्वर के आदर्श के चिह्न को खो देता हूँ, तो मैंने पाप किया है। जब हम पाप या पापी शब्द सुनते हैं, तो हम इसे कुछ जघन्य चीजों से जोड़ते हैं। हम आपराधिक व्यवहार के बारे में सोचते हैं। हम उसके बारे में सोचते हैं जो सामाजिक रूप से अस्वीकार्य है और इसमें वह सब शामिल है। इसलिए, जब भी हम अपने जीवन के लिए परमेश्वर के आदर्श के निशाने से चूक जाते हैं, हम पाप करते हैं। जब भी हम कुछ ऐसा करते हैं जो परमेश्वर हमसे नहीं करवाना चाहता, तो हमने पाप किया है। जब कभी हम वह नहीं करते जो परमेश्वर हमसे करवाना चाहता है, तो हमने पाप किया है। इसलिए सुनिश्चित करें कि हम समझते हैं कि हर बार जब आप एक निशान से चूक जाते हैं, हम परमेश्वर के इरादे से कम हो गए हैं और आपने पाप किया है। वह व्यक्ति चूक गया। यह पाप का विचार है। जब मैं अपने जीवन के लिए परमेश्वर के आदर्श के चिह्न को खो देता हूँ, तो मैंने पाप किया है। जब हम पाप या पापी शब्द सुनते हैं, तो हम इसे कुछ जघन्य चीजों से जोड़ते हैं। हम आपराधिक व्यवहार के बारे में सोचते हैं। हम उसके बारे में सोचते हैं जो सामाजिक रूप से अस्वीकार्य है और इसमें वह सब शामिल है। इसलिए, जब भी हम अपने जीवन के लिए परमेश्वर के आदर्श के निशाने से चूक जाते हैं, हम पाप करते हैं। जब भी हम कुछ ऐसा करते हैं जो परमेश्वर हमसे नहीं करवाना चाहता, तो हमने पाप किया है। जब कभी हम वह नहीं करते जो परमेश्वर हमसे करवाना चाहता है, तो हमने पाप किया है। इसलिए सुनिश्चित करें कि हम समझते हैं कि हर बार जब आप एक निशान से चूक जाते हैं, हम परमेश्वर के इरादे से कम हो गए हैं और आपने पाप किया है। वह व्यक्ति चूक गया। यह पाप का विचार है। जब मैं अपने जीवन के लिए परमेश्वर के आदर्श के चिह्न को खो देता हूँ, तो मैंने पाप किया है। जब हम पाप या पापी शब्द सुनते हैं, तो हम इसे कुछ जघन्य चीजों से जोड़ते हैं। हम आपराधिक व्यवहार के बारे में सोचते हैं। हम उसके बारे में सोचते हैं जो सामाजिक रूप से अस्वीकार्य है और इसमें वह सब शामिल है। इसलिए, जब भी हम अपने जीवन के लिए परमेश्वर के आदर्श के निशाने

से चूक जाते हैं, हम पाप करते हैं। जब भी हम कुछ ऐसा करते हैं जो परमेश्वर हमसे नहीं करवाना चाहता, तो हमने पाप किया है। जब कभी हम वह नहीं करते जो परमेश्वर हमसे करवाना चाहता है, तो हमने पाप किया है। इसलिए सुनिश्चित करें कि हम समझते हैं कि हर बार जब आप एक निशान से चूक जाते हैं, हम परमेश्वर के इरादे से कम हो गए हैं और आपने पाप किया है। हम इसे कुछ जघन्य चीजों से जोड़कर देखते हैं। हम आपराधिक व्यवहार के बारे में सोचते हैं। हम उसके बारे में सोचते हैं जो सामाजिक रूप से अस्वीकार्य है और इसमें वह सब शामिल है। इसलिए, जब भी हम अपने जीवन के लिए परमेश्वर के आदर्श के निशाने से चूक जाते हैं, हम पाप करते हैं। जब भी हम कुछ ऐसा करते हैं जो परमेश्वर हमसे नहीं करवाना चाहता, तो हमने पाप किया है। जब कभी हम वह नहीं करते जो परमेश्वर हमसे करवाना चाहता है, तो हमने पाप किया है। इसलिए सुनिश्चित करें कि हम समझते हैं कि हर बार जब आप एक निशान से चूक जाते हैं, हम परमेश्वर के इरादे से कम हो गए हैं और आपने पाप किया है। हम इसे कुछ जघन्य चीजों से जोड़कर देखते हैं। हम आपराधिक व्यवहार के बारे में सोचते हैं। हम उसके बारे में सोचते हैं जो सामाजिक रूप से अस्वीकार्य है और इसमें वह सब शामिल है। इसलिए, जब भी हम अपने जीवन के लिए परमेश्वर के आदर्श के निशाने से चूक जाते हैं, हम पाप करते हैं। जब भी हम कुछ ऐसा करते हैं जो परमेश्वर हमसे नहीं करवाना चाहता, तो हमने पाप किया है। जब कभी हम वह नहीं करते जो परमेश्वर हमसे करवाना चाहता है, तो हमने पाप किया है। इसलिए सुनिश्चित करें कि हम समझते हैं कि हर बार जब आप एक निशान से चूक जाते हैं, हम परमेश्वर के इरादे से कम हो गए हैं और आपने पाप किया है। ऐसा कुछ न करें जो परमेश्वर हमसे करवाना चाहता है, हमने पाप किया है। इसलिए सुनिश्चित करें कि हम समझते हैं कि हर बार जब आप एक निशान से चूक जाते हैं, हम परमेश्वर के इरादे से कम हो गए हैं और आपने पाप किया है। ऐसा कुछ न करें जो परमेश्वर हमसे करवाना चाहता है, हमने पाप किया है। इसलिए सुनिश्चित करें कि हम समझते हैं कि हर बार जब आप एक निशान से चूक जाते हैं, हम परमेश्वर के इरादे से कम हो गए हैं और आपने पाप किया है।

रोमियों 3:23 में पौलुस कहता है, "सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" निशान चूक जाने पर, हम अपने सृष्टिकर्ता के ऋणी होने लगते हैं। उसने हमें निष्पाप और अपनी छवि में बनाया है, लेकिन धीरे-धीरे हम पाप के भागी होने लगते हैं और एक खाई बढ़ती जाती है। सवाल यह है कि हम इसके बारे में क्या करने जा रहे हैं? यह एक कठिन प्रश्न है। चूँकि सभी पुरुष और महिलाएँ पापी हैं, वे एक दूसरे के लिए उस ऋण का भुगतान नहीं कर सकते। मेरे पास खुद की देखभाल करने के लिए पर्याप्त पवित्रता नहीं है, आपको देने की बात तो दूर है। आपके पास अपनी देखभाल करने के लिए पर्याप्त नहीं है, मुझे उधार देने की तो बात ही छोड़िए। इसलिए सामूहिक रूप से हम व्यक्तिगत रूप से बेहतर नहीं हैं। हम बस मानवता का एक समूह हैं जो इस विशाल पाप ऋण के साथ समय से गुजर रहे हैं जो हमें मार डालेगा।

पौलुस ने रोमियों 6:23 में यह भी कहा, "'पाप की मजदूरी मृत्यु है...'" मजदूरी का विचार यह है कि हमारे कार्यों से कुछ अर्जित किया जाता है। वह भुगतान वापस है। यही हमारे रास्ते आ रहा है। हम अपने पाप के लिए जो अपेक्षा कर सकते हैं वह मृत्यु है। तुम कहते हो, मृत्यु क्या है? ओह, इसका मतलब यह नहीं है कि उसे जमीन के नीचे एक संदूक में डाल दिया जाए, वैसे भी यह होने वाला है। "मृत्यु" शब्द का अर्थ है अलगाव। हमारा पाप ऋण हमें उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर से अलग कर देता है जिसने हमें इतना सिद्ध बनाया है। संयोग से, यह विचार अलगाव और आपके बैंकर के साथ आपके संबंध की तरह होगा यदि आप एक ऋण जमा करते रहे जो आप भुगतान नहीं कर सके।

अच्छा हम क्या करें? यहोवा की स्तुति करो, परमेश्वर ने उत्तर दिया। उत्तर की जड़ें पुराने नियम में हैं। अपनी बाइबिल लें और लैव्यव्यवस्था 17:11 की ओर मुड़ें। यह एक मूलभूत सिद्धांत बताता है जो शाश्वत है। "क्योंकि प्राणी का प्राण लोहू में है, और मैं ने उसे तुम को इसलिथे दिया है, कि वेदी पर अपके निमित्त प्रायश्चित्त करो।" अब मुझे यकीन नहीं है कि क्यों, लेकिन अगर आप इसके बारे में एक पल के लिए सोचते हैं तो यह एक साथ मिलना शुरू हो जाता है। परमेश्वर और उसकी अनंत बुद्धि ने सार रूप में आदेश दिया कि "मनुष्य, तुम पाप कर रहे हो और वह पाप तुम्हारे जीवन को छीन रहा है। पाप मेरे प्रति ऋण पैदा कर रहा है जो तुम्हें मुझसे दूर और दूर खींच रहा है। आपका जीवन समाप्त हो रहा है और रक्त से जीवन संभव है। संयोग से केवल पिछले कुछ वर्षों में ही हम वैज्ञानिक रूप से यह समझने लगे हैं कि यह कथन कितना सही है, जीवन के लिए रक्त कितना आवश्यक है। फिर परमेश्वर ने कहा, "क्यों हम बलिदान के लहू को वेदी पर उंडेलने नहीं देते, पाप का दाम चुकाते हैं? यह पाप का प्रायश्चित करेगा। नए नियम में सैकड़ों और सैकड़ों वर्ष बाद जब इब्रानी लेखक प्रेरणा के अधीन अध्याय 9, पद 22 में लिख रहा था, वह उसी विषय को दोहराता है। यह कहता है, "बिना लहू बहाए पाप की क्षमा नहीं हो सकती"। पाप का भुगतान करने के लिए जीवन होना चाहिए। जीवन मृत्यु के लिए भुगतान करता है।

इसलिए इस्राएल ने, उनके पाप और उनके और परमेश्वर के बीच बढ़ती हुई खाई को जानते हुए, उस पाप ऋण के लिए भुगतान को देखा जिसे परमेश्वर ने विशेष रूप से "प्रायश्चित का दिन" कहा। प्रायश्चित का दिन ऐसा होगा कि हर साल एक दिन जहां इस्राएल एक राष्ट्र के रूप में अपने पाप ऋण को चुकाएगा। हारून, जो कि महायाजक था, को अपने पाप का स्वयं ध्यान रखना होगा। "हारून अपके और अपके घराने के लिथे प्रायश्चित्त करने के लिथे अपके पापबलि के बछड़े को ले आए, और अपके पापबलि के बछड़े को बलिदान करे।" (लैव्यव्यवस्था 16:11) हारून उस बैल का गला काट देता और उसका लहू अपने पाप का प्रायश्चित करने के लिए वेदी पर उण्डेल देता, लेकिन तब उसे कुछ और करना पड़ता था।

तब वह लोगों के निमित्त पापबलि के बकरे का वध करेगा, और उसके लहू को परदे के पीछे ले जाकर वैसा ही करेगा जैसा उसने बछड़े के लोहू से किया था। वह इसे प्रायश्चित के ढकने पर और उसके सामने छिड़कता था। इस प्रकार उसने परमपवित्र स्थान के लिये इस्राएलियों की अशुद्धता और विद्रोह के कारण प्रायश्चित किया, चाहे उनके पाप चाहे जो भी रहे हों। आप देखिए, परमेश्वर ने फैसला किया कि उस लहू के बहाए जाने से, पाप का प्रायश्चित हो सकता है। इसका भुगतान किया जा सकता था। अत: हारून ने ऐसा तब तक किया जब तक वह मर नहीं गया और फिर महायाजक ने वर्षों और पीढ़ियों तक और सदियों तक ऐसा किया, लेकिन एक समस्या थी। लोग उन पशुओं के लहू को विश्वास के साथ चढ़ा रहे थे। वे भगवान के सामने आज्ञाकारी रूप से आ रहे थे और वे विनम्र थे और इससे भगवान प्रसन्न हुए और इसलिए भगवान उन लोगों पर मुस्कुराए, उन्होंने उन्हें माफ कर दिया, परन्तु हमें यह समझने की आवश्यकता है कि पाप का ऋण वास्तव में चुकाया नहीं जा रहा था। उन जानवरों से नहीं। (लैव्यव्यवस्था 16:15)

इब्रानियों 10:1-3 में बाइबल कहती है, "व्यवस्था आनेवाली अच्छी वस्तुओं की छाया मात्र है --- स्वयं वास्तविकताएँ नहीं। जो आराधना करने के लिये निकट आते हैं, उन्हें सिद्ध करो। यदि हो सकता, तो क्या वे चढ़ाना बन्द न करते? क्योंकि उपासक एक ही बार में शुद्ध हो जाते, और फिर अपने पापों के लिये दोषी न होते। परन्तु वे बलिदान प्रति वर्ष स्मरण दिलानेवाले हैं। पाप," और पद 4 कहता है, "क्योंकि यह अनहोना है कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे।" यदि आप इसके बारे में सोचते हैं, तो आप जानते हैं कि यह सही है। ऐसा कोई तरीका नहीं है कि किसी जानवर का लहू, भले ही वह आज्ञाकारिता और विनम्रता में चढ़ाया गया हो, वह उस व्यक्ति के पाप को दूर कर सकता है जिसे परमेश्वर की छवि में बनाया गया था। इसलिए: उन पशु बलि के साथ कोई भी मनुष्य वास्तव में शुद्ध नहीं हो सकता था। इस प्रकार यीशु मसीह, वचन, जो देहधारी हुआ, में प्रवेश किया।

यूहन्ना 1:1, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।" पद 14 कहता है, "वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने पिता के एकलौते का तेज देखा।" इब्रानियों 4:15 कहता है कि उसने पाप रहित जीवन व्यतीत किया। "हम उस महायाजक की सेवा नहीं करते, जो हमारी दुर्बलताओं से निपट नहीं सकता, परन्तु वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी वह निष्पाप निकला।" इसलिए जब वह एक सिद्ध, निष्पाप व्यक्ति आया और जीया, तो इसने उसे पाप ऋण के लिए वास्तविक, वास्तविक और आधिकारिक भुगतान होने के योग्य बना दिया। "क्योंकि मसीह ने मनुष्य के बनाए हुए पवित्रस्थान में प्रवेश नहीं किया, जो कि सच्चे पवित्र स्थान का प्रतिरूप था; वह तो स्वर्ग में ही प्रवेश किया, ताकि अब हमारे लिये परमेश्वर के साम्हने प्रकट हो। महायाजक प्रति वर्ष पराए का लोहू लेकर परमपवित्र स्थान में प्रवेश करता है।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने "यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, 'देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है!'" (यूहन्ना 1:29) प्रेरित यूहन्ना ने भी 1 यूहन्ना 2:1-2 में लिखा था। "मेरे प्यारे बच्चों, मैं तुम्हें यह इसलिए लिखता हूँ ताकि तुम पाप न करो। लेकिन अगर कोई पाप करता है।" क्या आपको यह पसंद नहीं है? वह कहता है कि मैं कोशिश कर रहा हूं कि आप पाप न करें, लेकिन मुझे पता है कि आप कभी-कभी जा रहे हैं। जब आप पाप करते हैं, तो सुनें। "हमारे पास बोलने वाला है हमारे बचाव में पिता के लिए --- यीशु मसीह, धर्मी। वह हमारे पापों के लिए प्रायश्चित बलिदान है, और न केवल हमारे लिए बल्कि पूरे संसार के पापों के लिए भी।" क्या यह अविश्वसनीय नहीं है? हाँ। क्या यह अथाह नहीं है? हाँ, यह है। क्या यह बहुत अच्छा नहीं है सच होना? नहीं, यह सच होना बहुत अच्छा नहीं है। यह बिल्कुल सच है। जब आप उस क्रूस पर जाते हैं और जब आप उस बलिदान को स्वीकार करते हैं और उस एकमात्र नाम पर विश्वास करते हैं जिस पर आप विश्वास कर सकते हैं जिसमें आपको बचाया जाना चाहिए, यीशु। (प्रेरितों के काम 4:12) जब आप अपने पापों से पश्चाताप करते हैं, प्रेरितों के काम 20:21, और जब आप बपतिस्मा के जल में स्वयं को मसीह के साथ गाड़े जाने की अनुमति देकर उसी मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान को पुन: क्रियान्वित करते हैं ताकि एक नया अपने पाप के साथ प्राणी उस पानी की कब्र में दफन है, रोमियों 6:3-5, आप एक ईसाई बन जाते हैं और आप प्रायश्चित की अवधारणा को समझते हैं।

जॉन ब्यान ने 17वीं शताब्दी में "पिलग्रिम्स प्रोग्रेस" नामक सबसे प्रसिद्ध कृतियों में से एक लिखी थी। "पिलग्रिम्स प्रोग्रेस" में मुख्य पात्र "क्रिश्चियन" नामक पात्र था। यह सब सांकेतिक था। सुनिए उसने इस कार्य में ईसाई के बारे में क्या कहा। "अब मैंने अपने सपने में देखा कि जिस राजमार्ग पर ईसाई को जाना था, उसके दोनों ओर एक दीवार से घिरा हुआ था, और उस दीवार को मोक्ष कहा जाता था। इस तरह से बर्डन क्रिश्चियन भागे, लेकिन बोझ के कारण बड़ी कठिनाई के बिना नहीं वह उसकी पीठ पर था। वह इस प्रकार भागा जब तक कि वह कुछ ऊपर की ओर एक जगह पर नहीं आया और उस जगह पर एक क्रॉस खड़ा था और नीचे एक कब्र थी। तो मैंने अपने सपने में देखा कि जैसे ईसाई क्रॉस के साथ आया था ,पाठ #1065, स्टीव फ्लैट 7-7-1992

नियम

अंग्रेजी भाषा, या उस मामले के लिए किसी भी भाषा में सबसे कीमती और उत्साहजनक शब्दों में से एक शब्द "वाचा" है। वाचा, यह अनमोल है। यह सिर्फ कीमती नहीं है, यह प्रचलित है। क्या आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि वाचा शब्द बाइबल में सैकड़ों बार प्रयोग किया गया है? यह जरूरी है कि हम इसका अर्थ समझें।

1. अनुबंध दो पक्षों के बीच एक स्थायी स्थायी बंधन थे जिन्हें तोड़ा नहीं जाना था। अब उन शब्दों पर ध्यान दें जिनका मैंने प्रयोग किया था, स्थायी, स्थायी, टूटे नहीं। हम बात कर रहे हैं असली सीमेंट की। अनुबंध निर्विवाद विश्वास की प्रतिज्ञाएँ थीं। एक वाचा क्या है? क्या यह एक अनुबंध के समान है? या, जैसे एक किशोर ने कहा "एक अनुबंध एक सुपर गोंद अनुबंध है।" लेकिन एक वाचा एक अनुबंध की तरह नहीं है। अंतर उनकी स्थापना के बहुत कारण में वापस चला जाता है। आपसी अविश्वास पर एक अनुबंध बनाया गया है। इसलिए आपके पास एक अनुबंध है। लेकिन एक वाचा आपसी विश्वास पर बनी होती है। तो इस मायने में वे ठीक विपरीत हैं।

   यदि आप या आपका व्यवसाय एक घर या कुछ और बेचते हैं तो आप एक अनुबंध लिखते हैं। आप सुनिश्चित करें कि आपको ये सभी प्रभाव मिल गए हैं, बस उस स्थिति में जब दूसरा पक्ष सौदेबाजी के अपने अंत के साथ आने में विफल रहता है। वह एक अनुबंध है। लेकिन एक वाचा में वे शर्तें नहीं होती हैं। एक टूटी हुई वाचा का एकमात्र वास्तविक प्रभाव वही है, टूटना, और उसके साथ आने वाली सभी चोटें। तो एक अनुबंध वह स्थायी बंधन है जो निर्विवाद विश्वास से बनता है।

2. जैसा कि बाइबल में देखा गया है, एक वाचा को अक्सर उपहारों के आदान-प्रदान द्वारा दर्शाया जाता है। उदाहरण के लिए, बाइबल ऐसे कई उदाहरण देती है जहाँ पुरुष एक-दूसरे के साथ वाचा बाँधेंगे और उन्होंने अपने कपड़ों के कुछ हिस्सों का आदान-प्रदान किया ताकि वे वाचा को दृढ़ और प्रतीक बना सकें। पुरुष अक्सर ट्यूनिक्स का व्यापार करते थे। वे अपने कोट का व्यापार करते थे। जब उनमें से एक रास्ते से नीचे चला गया, और आपने बिल को बॉब का कोट पहने हुए देखा, तो आप शायद सोचेंगे, "ठीक है, देखो बिल बॉब के साथ वाचा में होना चाहिए क्योंकि उसने अपने बाहरी वस्त्र पहने हैं।" पुराने दिनों में अक्सर जब दो व्यक्ति वाचा में प्रवेश करते थे, तो वे बेल्ट की अदला-बदली करते थे, और वे उस बेल्ट पर हथियार भी रखते थे। यह कहने का एक तरीका था, अगर मैं किसी अन्य व्यक्ति के साथ वाचा में हूँ और यदि आप उसे नुकसान पहुँचाने की कोशिश करते हैं, तो आपको मुझसे भी निपटना होगा। हम अनुबंध में हैं।

   वैसे, वाचा का एक रूप है जिसे मैं जानता हूं कि अधिकांश वयस्क लोग आज इस दुनिया में प्रवेश करते हैं। यह शादी है। यह एक वाचा है, ऐसा मलाकी कहता है। इसे इब्रानियों के 13वें अध्याय में भी उद्धृत किया गया था। यहां तक कि शादी में आज भी वे अंगूठियों का आदान-प्रदान करते हैं और वाचा को मजबूत करने के प्रतीक के रूप में सदियों से ऐसा करते आ रहे हैं। अक्सर उपहारों का आदान-प्रदान होता है।

3. एक वाचा को समय से आगे बढ़ने के लिए डिज़ाइन किया गया है। आप एक वाचा नहीं पहनते हैं। ओह, यह पूरा किया जा सकता है। इसके एक उदाहरण पर नीचे चर्चा की गई है, लेकिन जब तक इसे लागू किया जाना है, यह चलता रहेगा। यहाँ तक कि मृत्यु भी एक वाचा को नहीं रोक सकती है और उस पर बाद में भी चर्चा की जाएगी।

तो एक वाचा एक स्थायी, स्थायी, विश्वास का निर्विवाद बंधन है और अक्सर उपहारों का प्रतीक होता है और समय से आगे निकल जाता है।

वाचाओं के बारे में बाइबल हमें क्या बताती है? चर्चा के लिए उन्हें तीन प्रकार की वाचाओं में जोड़ा जाएगा। दो लोगों के बीच अनुबंध होते हैं, पुरुष परमेश्वर के साथ अनुबंध बनाते हैं और परमेश्वर पुरुषों के साथ अनुबंध बनाते हैं।

1. दो लोगों के बीच वाचाएं। इब्राहीम ने अबीमेलेक के साथ वाचा बान्धी। (उत्पत्ति 21) लाबान ने याकूब के साथ एक वाचा बाँधी। (उत्पत्ति 31) अहाब और बेन्हदद ने 1 राजा 20:34 में एक वाचा बाँधी। बाइबल में लोगों के बीच जो वाचा हम में से अधिकांश के बारे में सोचती है वह शायद दाऊद और राजा शाऊल के पुत्र योनातन के बीच थी। ये दोनों सगे भाइयों से भी ज्यादा करीब थे। "जब दाऊद शाऊल से बातें कर चुका, तब योनातान का मन दाऊद से मिल गया, और उस से अपके ही समान प्रेम रखने लगा। उस दिन से शाऊल ने दाऊद को अपके पास रखा, और अपके पिता के घर को लौटने न दिया।" (1 शमूएल 18:1-2) अब पद 3 को देखें। "और योनातन ने दाऊद से वाचा बान्धी, क्योंकि वह उस से अपके ही समान प्रेम रखता या। योनातान ने अपना बागा जो उसने पहिने हुए था उतारकर अंगरखा समेत दाऊद को दे दिया, और यहां तक कि उसकी तलवार, उसका धनुष और उसका बेल्ट भी।" आप उन प्रतीकों को देखते हैं, वे उपहार, वे वाचा में थे। वे वर्णन से परे एक दूसरे से प्यार करते थे और उन्होंने कहा कि कुछ भी हमें कभी अलग नहीं रखेगा। संयोग से, दो अध्यायों में बाद में 1 शमूएल 20 में, वाचा की पुष्टि की गई है।

बाइबल में सबसे मर्मस्पर्शी दृश्यों में से एक क्या हो सकता है जिसे मैं याद कर सकता हूँ वर्षों बाद, जब योनातान और उसके पिता शाऊल को पलिश्तियों द्वारा मार डाला गया था। दाऊद पूरे इस्राएल का राजा बन गया था। एक दिन दाऊद ने अपने पहरेदारों को अपने पास बुलाकर कहा, "क्या शाऊल के घराने में से कोई अब तक बचा है, जिस को मैं योनातन के कारण प्रीति दिखाऊं?" (2 शमूएल 9:1) वहाँ एक छोटा लड़का था, या यदि उसके वह छोटा था, वह अब बड़ा हो गया था। उसका नाम मपीबोशेत था। जब नगर लूटा जा रहा था, तब धाई ने उसे गिरा दिया था, वह अपाहिज हो गया था और अब वह लो देबार नामक एक छोटे से जंगल में छिपा हुआ था। दाऊद ने उसे बुलवा भेजा और उसे राजा की मेज पर रख दिया और योनातान की सारी संपत्ति उसे दे दी।

2. <u>पुरुषों और भगवान के बीच वाचाएं</u>. कभी-कभी मनुष्य और परमेश्वर के बीच वाचाएँ बनाई जाती थीं, जहाँ पुरुषों ने इसकी पहल की। याकूब ने उत्पत्ति 28 में परमेश्वर के लिए एक को बनाया। योशिय्याह ने 2 राजाओं 23 में एक और बनाया।

3. ईश्वर और मनुष्य के बीच वाचाएँ। परमेश्वर पहल करता है और मनुष्य के साथ एक वाचा बाँधता है। क्या आपके पास ईश्वर का वादा था या किसी साथी इंसान का वादा था? इसका उत्तर अपेक्षाकृत स्पष्ट है। हम परमेश्वर से वाचा क्यों चाहेंगे? निम्नलिखित कारणों से वे सबसे महत्वपूर्ण वाचाएं हैं:
   a. परमेश्वर के पास अधिक से अधिक अनुबंध बनाने की शक्ति है। परमेश्वर हमारे लिए ऐसे कार्य कर सकता है जो यदि वह चाहे तो हम कभी नहीं कर सकते। हमें पाप की समस्या है। इसके लिए आप या मैं कुछ भी नहीं कर सकते, आप मेरे लिए कुछ भी नहीं कर सकते हैं, लेकिन अगर परमेश्वर ने वाचा बनाना चुना, तो वह इसे संभाल सकता है।
   बी। परमेश्वर कभी वाचा नहीं तोड़ेगा। वह सब विश्वासयोग्य है। उसके भरोसे का सवाल ही नहीं उठता। यह बिल्कुल स्थायी है।

अच्छा, परमेश्वर की कुछ वाचाएँ क्या हैं?

आइए परमेश्वर द्वारा मनुष्य के साथ वाचा बाँधने के चार या पाँच उदाहरणों को देखें।

a. जब परमेश्वर ने पृथ्वी को जल से नष्ट कर दिया था और नूह और उसके परिवार को और जहाज़ में जानवरों के पूरे समूह को बचा लिया था, तो परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम्हारे साथ अपनी वाचा बाँधता हूँ: फिर कभी बाढ़ के पानी से सभी जीवन नष्ट नहीं होंगे; पृथ्वी को नष्ट करने के लिये फिर कभी जलप्रलय न होगा। और परमेश्वर ने कहा, 'यह उस वाचा का चिन्ह है जो मैं तुम्हारे और तुम्हारे साथ रहनेवाले सब जीवित प्राणियोंके बीच बान्धता हूं, यह वाचा जो आनेवाली पीढ़ी के लिथे है: बादलों में मेघधनुष, और यह मेरे और पृथ्वी के बीच में वाचा का चिन्ह होगा।'" (उत्पत्ति 9:11-12) यह परमेश्वर की ओर से भरोसे का वादा है। इसे लिखो और इसे पत्थर पर रख दो, यह कभी नहीं बदलेगा। हर बार जब अच्छी बारिश होती है और धूप की किरणें पानी के उन मोतियों के माध्यम से आती हैं और हम ऊपर देखते हैं और आकाश में उस बहुरंगी इंद्रधनुष को देखते हैं, तो हमें याद आता है कि हमारे भगवान' अपनी बात रख रहा है। उन दिनों बारिश थमी ही नहीं। यह हमारे लिए रुकता है ना? वादा है। ओह, यह सिर्फ पहला है।

बी। इस्राएलियों को बंधुआई से छुड़ाने के लिये जब परमेश्वर ने मूसा को मिस्र में लौटा दिया, तब मूसा ने कहा, हमारे परमेश्वर यहोवा ने होरेब पर हम से वाचा बान्धी; यहोवा ने यह वाचा हमारे पुरखाओं से नहीं परन्तु हम ही से बान्धी हम सब के साथ जो आज यहां जीवित हैं। यहोवा ने पर्वत की आग में से तुम से आम्हने साम्हने बातें की। ... उस समय मैं यहोवा के और तुम्हारे बीच में खड़ा हुआ, कि तुम्हें यहोवा का वचन सुनाऊं, क्योंकि तुम आग से डर गए और पहाड़ पर नहीं गए।" (व्यवस्थाविवरण 5:2, 4) फिर मूसा उन बातों का वर्णन करता है जिन्हें आज हम दस आज्ञाएँ कहते हैं, जो इस्राएल के लोगों के साथ उस पुरानी वाचा की नींव है। परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम्हारा परमेश्वर बनने जा रहा हूँ, मैं तुम्हारी अगुवाई करने जा रहा हूँ। मैं तुम्हें आशीष देने जा रहा हूँ जैसा कि मैंने अब्राहम से वादा किया था।" वह वाचा थी। भगवान इसके प्रति वफादार रहे।

सी। इस्राएल के साथ उस पुरानी वाचा के बारे में यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा परमेश्वर को कुछ कहना था। यहोवा की यह वाणी है, 'वह समय आ रहा है, जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बान्धूंगा। उन्हें मिस्र से बाहर निकालने के लिए हाथ, क्योंकि उन्होंने मेरी वाचा तोड़ दी है। (यिर्मयाह 31:31-32) अब देखें कि क्या होता है। कभी-कभी मनुष्य उस भरोसे की प्रतिज्ञा को तोड़ देते हैं। "यद्यपि मैं उनका पति था, 'यहोवा की घोषणा करता है।' यह वह वाचा है जिसे मैं उस समय के बाद इस्राएल के घराने के साथ बान्धूंगा, यहोवा की यही वाणी है। मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊंगा और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा, मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे। (यिर्मयाह 31:32-34) ओह, क्या ही सुन्दर प्रतिज्ञा है। इसमें अभी भी कुछ सौ वर्ष लगे,

डी। सुनिए यीशु ने अपने मरने से कुछ ही घंटे पहले ऊपरी कमरे में प्रेरितों से क्या कहा। "जब वे खा ही रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली, और धन्यवाद करके तोड़ी, और चेलों को देकर कहा, लो, खाओ, यह मेरी देह है। तब उस ने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, तुम सब इस में से पीओ, यह वाचा का मेरा वह लहू है, जो बहुतोंके लिथे पाप-क्षमा के निमित्त बहाया जाता है।'" (मत्ती 26:26-

26) 27) “नई वाचा अभी शुरू हो रही है, बस कुछ ही घंटों में, जैसे ही मेरा लहू बहाया जाता है, सभी पापों की क्षमा, यहूदियों, अन्यजातियों, हर कोई जो मेरे पास आता है, वह भेंट के लिए वहाँ जा रहा है और जब तक पृथ्वी को रहने दिया जाएगा तब तक वह कभी नहीं मिटेगा।”

पूरा इब्रानी पत्र पुराने पर इस नई वाचा की श्रेष्ठता के बारे में एक महान ग्रंथ है। परन्तु यीशु द्वारा स्थापित वाचा पर इब्रानी लेखक की व्याख्या को देखें। यह कहता है, "परन्तु जो सेवकाई यीशु को प्राप्त हुई है वह उनकी (पुरानी बातों की बात करते हुए) से उतनी ही उत्तम है जितनी कि वह वाचा जिसका वह मध्यस्थ है वह पुरानी से उत्तम है, और यह उत्तम प्रतिज्ञाओं पर आधारित है। क्योंकि यदि कुछ न होता उस पहली वाचा के साथ गलत, (जो मूसा के अधीन की गई वाचा थी) दूसरे के लिए कोई जगह नहीं मांगी गई थी। लेकिन भगवान ने लोगों के साथ गलती की और कहा: वह समय आ रहा है, जब मैं एक नई वाचा बांधूंगा, यहोवा की घोषणा करता है इस्राएल का घराना और यहूदा का घराना, यह उस वाचा के समान न होगा जो मैं ने उनके पुरखाओं से उस समय बान्धी यी, जब मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र से निकाल लाया, क्योंकि वे मेरी वाचा के प्रति विश्वासयोग्य नहीं रहे, और मैं ने उन से मुंह फेर लिया, यहोवा की यह वाणी है" (इब्रानियों 8:6-9 आयतों 8 और 9 के साथ यिर्मयाह 31 से उद्धृत) "इस वाचा को 'नया' कहकर, उसने बनाया है पहला अप्रचलित।" (इब्रानियों 8:13) मेरे पास आपके लिए शुभ समाचार है। यदि आपने बाइबल को कभी नहीं समझा है, तो पुराना नियम पुरानी वाचा थी, नया नियम नई वाचा है। हमें पुराने के सभी रीति-रिवाजों, नियमों और विधियों का पालन करने की आवश्यकता नहीं है। क्यों? कुलुस्सियों 2:14 हमें बताता है कि यह इसलिए है क्योंकि यीशु आया और उसने पुरानी वाचा को पूरा किया। वसीयतकर्ता की मृत्यु, यीशु को क्रूस पर चढ़ाया जाना, पुरानी वाचा को समाप्त कर दिया और एक नई और बेहतर वाचा की शुरुआत की। यह बेहतर वादों पर आधारित है और इसका एक बेहतर समाधान है। यह मेरा और आपका कानून के हर अक्षर को पूरी तरह से पालन करना नहीं है। हमारी नई वाचा एक उद्धारकर्ता पर स्थापित है जिसका लहू हमारे पापों को दूर करेगा, क्योंकि हम स्वयं इसे दूर नहीं कर सकते। प्रत्येक प्रभु के दिन, जब हम इकट्ठा होते हैं और अखमीरी रोटी तोड़ते हैं, तो हमें उस वाचा की याद आती है। शादी की अंगूठी जैसा प्रतीक है। जब भी हम दाखलता का वह फल लेते हैं, तो हम सोचते हैं, "यह मेरी वाचा का लहू है।" (मत्ती 26:28) याद रखें कि परमेश्वर ने हमारे लिए भलाई की प्रतिज्ञा की है और वह अब हमें अपनी वाचा पर लौटने के लिए कह रहा है। हमें उस अच्छाई को वापस करने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए और अपने जीवन को उसके लिए बलिदान के रूप में अर्पित करना चाहिए। वाचा एक महान शब्द है। जब भी हम दाखलता का वह फल लेते हैं, तो हम सोचते हैं, "यह मेरी वाचा का लहू है।" (मत्ती 26:28) याद रखें कि परमेश्वर ने हमारे लिए भलाई की प्रतिज्ञा की है और वह अब हमें अपनी वाचा पर लौटने के लिए कह रहा है। हमें उस अच्छाई को वापस करने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए और अपने जीवन को उसके लिए बलिदान के रूप में अर्पित करना चाहिए। वाचा एक महान शब्द है। जब भी हम दाखलता का वह फल लेते हैं, तो हम सोचते हैं, "यह मेरी वाचा का लहू है।" (मत्ती 26:28) याद रखें कि परमेश्वर ने हमारे लिए भलाई की प्रतिज्ञा की है और वह अब हमें अपनी वाचा पर लौटने के लिए कह रहा है। हमें उस अच्छाई को वापस करने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए और अपने जीवन को उसके लिए बलिदान के रूप में अर्पित करना चाहिए। वाचा एक महान शब्द है।अमेजिंग ग्रेस #1072, स्टीव फ्लैट 8-16-1992

अवतार

सबसे चौंकाने वाला सिद्धांत क्या है जिसकी मनुष्य कल्पना कर सकता है?

भगवान एक आदमी बन जाएगा. बस इतना ही है: कि परमेश्वर एक मनुष्य बन जाएगा और यही "देहधारण" शब्द की परिभाषा है, परमेश्वर का देह में आना। आज हमारे पाठ में मैं चाहता हूं कि हम अपने दिमाग को इस बात की कोशिश करने के लिए फैलाएं कि इसका अर्थ क्या है।

“आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। वह आदि में परमेश्वर के साथ था।" (यूहन्ना 1:1) "सच्ची ज्योति जो प्रत्येक मनुष्य को प्रकाश देती है, संसार में आने वाली थी। वह संसार में था, और यद्यपि जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, जगत ने उसे न पहचाना... तौभी जितनों ने उसे ग्रहण किया, और जो उसके नाम पर विश्वास रखते थे, उन सभों को उस ने परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया... -बच्चे प्राकृतिक वंश से पैदा नहीं होते हैं, न ही मानवीय निर्णय या पति की इच्छा से, बल्कि ईश्वर से पैदा होते हैं। वचन देहधारी हुआ और उसने हमारे बीच अपना वास किया। हम ने उसकी महिमा देखी है, अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण, जो पिता की ओर से आया है, उस एक की महिमा। (यूहन्ना 1:9-10, 12-14)

"परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा, परन्तु परमेश्वर जो पिता के पास है, उसी ने परमेश्वर को प्रगट किया है।" (यूहन्ना 1:18) किसी ने परमेश्वर को जाना है। क्या यह सोचना आश्चर्यजनक नहीं है? परमेश्वर को जानना, यह एक अच्छी बात है क्योंकि हम परमेश्वर के बारे में जानने की इस स्वाभाविक अतृप्त इच्छा के साथ पैदा हुए हैं। पास्कल ने एक बार कहा था कि हर इंसान के दिल में ईश्वर के आकार का

एक खालीपन होता है। बच्चे भगवान के बारे में जानना चाहते हैं, है ना? क्या आपके बच्चे आपसे परमेश्वर के बारे में प्रश्न पूछते हैं? मेरे बच्चों ने पूछा "डैडी, क्या भगवान की दाढ़ी है?" या डैडी, "स्वर्ग कहाँ है?" या पिताजी, "मुझे बताओ कि भगवान कितने साल के हैं।" वे परमेश्वर के बारे में जानना चाहते हैं, लेकिन हम भी ऐसा ही करते हैं।

हम ईसाई साक्ष्य कक्षाओं में रहे हैं या हो सकता है कि हमने इसे अपने दम पर सोचा हो और हम पाते हैं कि हम ईश्वर के बारे में कुछ निष्कर्ष निकाल सकते हैं जो हम अपने चारों ओर देखते हैं। आप रात में आकाश में सभी तारों को देखते हैं और सोचते हैं कि वे कितने दूर हैं, कितने बड़े हैं और कितने हैं। आपको लगता है कि एक ईश्वर होना चाहिए और वह बहुत शक्तिशाली होना चाहिए।

तब आप चारों ओर देखते हैं जो आप पृथ्वी पर देखते हैं और आप चीजों के क्रम को देखते हैं। केवल मानव शरीर को देखें। इस तथ्य के बारे में सोचें कि आपके शरीर में एक लाख मील लंबी रक्त वाहिकाएं हैं। मानव नेत्रगोलक की सभी पेचीदगियों के बारे में सोचें और दुनिया में सबसे शानदार फिल्टर मानव गुर्दा है। सभी प्रकार के विवरण और क्रम हैं। आप अपने बारे में सोचते हैं, एक भगवान होना चाहिए और वह बेहद बुद्धिमान होना चाहिए।

हम उन चीजों को देखते हैं और वे केवल प्रकाश की झिलमिलाहट हैं। वे हमें बताते हैं कि एक ईश्वर है, लेकिन वे हमें ईश्वर को जानने नहीं देते। वे हमें भगवान को समझने नहीं देते। अगर हम वास्तव में उसके साथ संवाद करने जा रहे हैं और अगर हम कभी भी अपने जीवन के लिए उस पर भरोसा करने जा रहे हैं, तो हमें मिलना ही होगा। यदि हम भगवान से मिलने जा रहे हैं, तो हमें उनसे उसी तत्व में मिलना होगा, लेकिन समस्या यह है कि हम उनके तत्व में नहीं जा सकते। अच्छी खबर यह है कि भगवान हमारे तत्व में आए। वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में डेरा किया और हमने पिता के एकलौते की महिमा देखी।

ईसाई धर्म के बारे में बहुत सारे सिद्धांत हैं जिन पर संदेह करने वालों को विश्वास करने में कठिनाई होती है। संशयवादी यीशु के पानी पर चलने के चमत्कार के बारे में पढ़ते हैं और कहते हैं, "क्या आप वास्तव में इस पर विश्वास करते हैं?" क्या आप सच में विश्वास करते हैं कि कोई पानी पर चला? या वे यीशु के मरने और शारीरिक रूप से कब्र से वापस आने के बारे में पढ़ते हैं और कहते हैं, क्या आप वास्तव में ऐसा मानते हैं? या कि क्या आप वास्तव में विश्वास करते हैं कि एक मनुष्य का निष्पादन पाप की दुनिया को मिटा सकता है? ये उनके लिए रोड़े अटका रहे हैं।

क्या आप जानते हैं कि संशयवादी के लिए असली बाधा क्या है? असली बाधा वही है जिसने यीशु के मूल आलोचकों को परेशान किया था। यह अवतार का सिद्धांत है। ईसाई धर्म के बारे में वास्तव में चौंका देने वाला दावा यह है कि ईश्वर मनुष्य बन गया। कि यीशु ने अपने ईश्वरत्व को खोए बिना किसी तरह मानवता को ग्रहण किया। दोस्तों, यहीं पर हम दुनिया के धर्मों से अलग हो जाते हैं। दुनिया के धर्म यीशु के लिए एक जगह बनाएंगे लेकिन वे आपको यह नहीं बताएंगे कि वह मांस में आए भगवान हैं। ओह, वे कहेंगे कि वह एक अच्छा आदमी है, वह एक भविष्यद्वक्ता है, वह एक शिक्षक है, लेकिन यदि आप यीशु के बारे में केवल इतना ही विश्वास करते हैं, तो आप नए नियम के साथ समस्याओं में पड़ जाते हैं।

लेकिन अगर जीसस ईश्वर के पुत्र थे, अगर जीसस ईश्वर के पुत्र हैं, तो और कुछ भी कोई वास्तविक समस्या नहीं है। यीशु पानी पर चल रहा है। यदि उसने पानी बनाया, तो वह उस पर क्यों नहीं चल सका? क्या आपको यह विश्वास करने में कोई समस्या है कि यदि यीशु स्वर्ग से आया, कि वह मृतकों में से वापस आ सकता है? क्या यह विश्वास करने में कोई समस्या है कि जो ईश्वरीय है, जो ईश्वर है, कि अगर वह मरने का फैसला करता है, तो क्या कोई आश्चर्य है कि उसकी मृत्यु का एक बचत महत्व हो सकता है? इतिहास में सबसे चौंकाने वाला दावा यूहन्ना 1:14 में है, "वचन देहधारी हुआ।" इसे रेखांकित करें, इसे लिखें और इसे याद करें। यदि आप उस पर विश्वास कर सकते हैं, तो आप इस पुस्तक में जो कुछ भी है उस पर विश्वास कर सकते हैं। वह अवतार है।

वैसे, क्या आपने कभी मेक्सिकन खाना खाया है? आप कहते हैं, "इसका किसी चीज़ से क्या लेना-देना है।" क्या आपने कभी चिली कोन कार्न लिया है? क्या आप जानते हैं कि चिली कॉन कार्न क्या है? इसका मतलब मांस के साथ मिर्च है, यही कॉन कार्ने का मतलब है। संयोग से वह कार्ने शब्द वही मूल शब्द है जिससे अवतार शब्द मिलता है। आप जानते हैं कि भगवान क्या कह रहे हैं। यूहन्ना अपने प्रस्तावना में हमें यही लिख रहा है। क्या आप जानते हैं कि अवतार क्या है? यह मांस के साथ भगवान है। यह मांस के साथ भगवान है। भगवान कोन। यूहन्ना 1:14 में यूहन्ना यही कह रहा है। वह हमारे बीच में रहा और यूनानी शब्द यूहन्ना 1:14 में रहा, जिसका अर्थ है कि उसने तम्बू खड़ा किया या उसने हमारे बीच निवास किया। अब यह भी एक आकर्षक विचार है। वह हमारे बीच में रहा करता था, वह हमारे बीच में डेरा डाले रहता था।

जब आप शब्द तम्बू सुनते हैं, आप बाइबल के विद्यार्थी, आप क्या सोचते हैं? आप पुराने नियम में मिलापवाले तम्बू के बारे में सोचते हैं न? कैसे इस्राएली इसे इधर-उधर ले जाते थे और इससे परमेश्वर की उपस्थिति का पता चलता था। तुम्हे याद है? तम्बू वह था जहाँ परमेश्वर

की महिमा थी। तुम तम्बू के विषय में सब प्रकार की बातें पढ़ते हो। एक बार पलिश्तियों के साथ युद्ध में, इस्राएल से मिलापवाले तम्बू को ले लिया गया था। उसके कुछ ही समय बाद एक महिला ने एक बच्चे को जन्म दिया और वह बहुत व्याकुल थी। क्या आप जानते हैं कि उसने अपने बेटे का नाम क्या रखा है? उसने उसे ईचबॉड कहा, जिसका अर्थ है कि महिमा विदा हो गई।

प्रेरित यूहन्ना ने पहले अध्याय में कहा था कि शुभ समाचार यह है कि महिमा अब लौट आई है। केवल इस बार महिमा डिब्बे में नहीं है, महिमा तंबू में नहीं है, महिमा मंदिर में नहीं है, महिमा शरीर में निवास करती है। अनंत सीमित हो गया और अदृश्य दृश्यमान हो गया और किसी तरह अनंत काल ने खुद को समय में निचोड़ लिया। प्रेरित यूहन्ना ने कहा, "मैं ने उसका तेज देखा, और मैं ने सुना, और मैं उसके पीछे हो लिया, और मैं उसकी छाती पर टेक लगाया, और जब मैं वहां झुका, तब मैं ने परमेश्वर के हृदय की धड़कन सुनी।" कितना साहसी विचार है। कितना रोमांचक विचार है। लेकिन वैसे भी कितना विभाजनकारी विचार है। मैं चाहता हूं कि आज आप यह जान लें कि ईसाईजगत का कोई अन्य सिद्धांत नहीं है जिसने अवतार के इस सिद्धांत से बड़ी बहस को जन्म दिया है। क्या आप जानते हैं कि यह क्या करता है भगवान के वास्तव में मांस में आने का विचार विश्वासियों को प्रशंसकों से अलग करता है।

यूहन्ना पद 11 का पहला अध्याय कहता है "वह उसके पास आया जो उसका अपना था, परन्तु उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया।" वे न समझे, न माने। यहाँ तक कि उसके अपने भाइयों ने भी शुरू में यह विश्वास नहीं किया कि यीशु देह में आया हुआ परमेश्वर था। कितने लाखों अभी भी उस पर विश्वास नहीं करते? दोस्तों, यीशु को एक कारण से सूली पर चढ़ाया गया था। उसे सूली पर नहीं चढ़ाया गया क्योंकि उसने सप्ताह के गलत दिन चमत्कार किए थे। उसे सूली पर इसलिए नहीं चढ़ाया गया क्योंकि उसने रब्बियों के कुछ पुराने धर्मोपदेशों की आलोचना की थी। उसे एक कारण से सूली पर चढ़ाया गया था, उसने दावा किया कि वह देह में परमेश्वर है और वे उसके साथ नहीं रह सकते थे। आरम्भिक कलीसिया में कोई भी विषय देहधारण के इस विषय से अधिक महत्वपूर्ण नहीं था।

कई वर्षों बाद, जॉन ने फिर से आत्मा की प्रेरणा के तहत लिखा, "इस प्रकार आप परमेश्वर की आत्मा को पहचान सकते हैं: प्रत्येक आत्मा जो स्वीकार करती है कि यीशु मसीह मांस में आया है, परमेश्वर से है, परन्तु प्रत्येक आत्मा जो स्वीकार नहीं करती है यीशु परमेश्वर की ओर से नहीं है। यह मसीह-विरोधी की आत्मा है, जिसके बारे में तुमने सुना है कि वह आ रही है और अब भी संसार में है।" (1 यूहन्ना 4:2-3) दोस्तों मैं चाहता हूँ कि आप जान लें कि मसीह-विरोधी की आत्मा वह आत्मा है जो इस संसार पर शासन करती है। इस दुनिया के अधिकांश, तथाकथित ईसाई जगत के अधिकांश लोगों ने इस साहसी दावे को खारिज कर दिया है कि भगवान मांस में आए हैं और लाखों लोग हैं जो इस पर विश्वास नहीं करते हैं, लेकिन ऐसा हुआ है। यूहन्ना के सुसमाचार, अध्याय 1, पद 12 और 13 की प्रस्तावना पर वापस जाते हुए, यहाँ उन लोगों के लिए प्रतिज्ञा है जो इस पर विश्वास कर सकते हैं। " तौभी जितनों ने उसे ग्रहण किया, और जो उसके नाम पर विश्वास रखते थे, उन सभोंको उस ने परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया --- वे सन्तान जो न स्वाभाविक वंश से उत्पन्न हुए, न मनुष्य के निर्णय से, न पति की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए।" यूहन्ना कहते हैं, "देखिए उनका क्या हो सकता है जो अवतार के बारे में इस अविश्वसनीय अवधारणा पर विश्वास कर सकते हैं। यदि आप इस पर विश्वास कर सकते हैं, तो आप ईश्वर के पुत्र या पुत्री बन सकते हैं।" दोस्तों, यह एक अद्भुत विचार है। जॉन ने कहा कि यदि आप एक यहूदी किशोर किसान लड़की के बच्चे के अलौकिक जन्म के तथ्य को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं, जो एक कुंवारी थी, तो आप स्वयं ईश्वर की अलौकिक पुन: रचना बन सकते हैं। उनका जन्म और आपका पुन: निर्माण उतना ही ईश्वर का है जितना कि दूसरा। आपके पास एक के बिना दूसरा नहीं हो सकता। अवतार केवल शुष्क धर्मशास्त्र नहीं है, यह अच्छी खबर है कि भगवान हमारे पास आए हैं। उसने ईश्वर की सन्तान बनने का अधिकार दिया --- वे बच्चे जिनका जन्म प्राकृतिक वंश से नहीं हुआ, न ही मानवीय निर्णय या पति की इच्छा से हुआ, बल्कि ईश्वर से पैदा हुआ। अवतार। यदि आप इस पर विश्वास कर सकते हैं, तो आप परमेश्वर के पुत्र या पुत्री बन सकते हैं। दोस्तों, यह एक अद्भुत विचार है। जॉन ने कहा कि यदि आप एक यहूदी किशोर किसान लड़की के बच्चे के अलौकिक जन्म के तथ्य को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं, जो एक कुंवारी थी, तो आप स्वयं ईश्वर की अलौकिक पुन: रचना बन सकते हैं। उनका जन्म और आपका पुन: निर्माण उतना ही ईश्वर का है जितना कि दूसरा। आपके पास एक के बिना दूसरा नहीं हो सकता। अवतार केवल शुष्क धर्मशास्त्र नहीं है, यह अच्छी खबर है कि भगवान हमारे पास आए हैं। उसने ईश्वर की सन्तान बनने का अधिकार दिया --- वे बच्चे जिनका जन्म प्राकृतिक वंश से नहीं हुआ, न ही मानवीय निर्णय या पति की इच्छा से हुआ, बल्कि ईश्वर से पैदा हुआ। अवतार। यदि आप इस पर विश्वास कर सकते हैं, तो आप परमेश्वर के पुत्र या पुत्री बन सकते हैं। दोस्तों, यह एक अद्भुत विचार है। जॉन ने कहा कि यदि आप एक यहूदी किशोर किसान लड़की के बच्चे के अलौकिक जन्म के तथ्य को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं, जो एक कुंवारी थी, तो आप स्वयं ईश्वर की अलौकिक पुन: रचना बन सकते हैं। उनका जन्म और आपका पुन: निर्माण उतना ही ईश्वर का है जितना कि दूसरा। आपके पास एक के बिना दूसरा नहीं हो सकता। अवतार केवल शुष्क धर्मशास्त्र नहीं है, यह अच्छी खबर है कि भगवान हमारे पास आए हैं। न ही मानवीय निर्णय या पति की इच्छा से, बल्कि ईश्वर से पैदा हुआ। " जॉन कहते हैं, "देखो उनका क्या हो सकता है जो अवतार के बारे में इस अविश्वसनीय अवधारणा पर विश्वास कर सकते हैं। यदि आप इस पर विश्वास कर सकते हैं, तो आप ईश्वर के पुत्र या पुत्री बन सकते हैं। " दोस्तों, यह एक अद्भुत विचार है। जॉन ने कहा कि यदि आप एक यहूदी किशोर किसान लड़की के बच्चे के अलौकिक जन्म के तथ्य को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं, जो एक कुंवारी थी, तो आप स्वयं ईश्वर की अलौकिक पुन: रचना बन सकते हैं। उनका जन्म और आपका पुन: निर्माण उतना ही ईश्वर का है जितना कि दूसरा। आपके पास एक के बिना दूसरा नहीं हो सकता। अवतार केवल शुष्क धर्मशास्त्र नहीं है, यह अच्छी खबर है कि भगवान हमारे पास आए हैं। न ही मानवीय निर्णय या पति की इच्छा से,

बल्कि ईश्वर से पैदा हुआ। " जॉन कहते हैं, "देखो उनका क्या हो सकता है जो अवतार के बारे में इस अविश्वसनीय अवधारणा पर विश्वास कर सकते हैं। यदि आप इस पर विश्वास कर सकते हैं, तो आप ईश्वर के पुत्र या पुत्री बन सकते हैं। " दोस्तों, यह एक अद्भुत विचार है। जॉन ने कहा कि यदि आप एक यहूदी किशोर किसान लड़की के बच्चे के अलौकिक जन्म के तथ्य को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं, जो एक कुंवारी थी, तो आप स्वयं ईश्वर की अलौकिक पुन: रचना बन सकते हैं। उनका जन्म और आपका पुन: निर्माण उतना ही ईश्वर का है जितना कि दूसरा। आपके पास एक के बिना दूसरा नहीं हो सकता। अवतार केवल शुष्क धर्मशास्त्र नहीं है, यह अच्छी खबर है कि भगवान हमारे पास आए हैं। आप परमेश्वर के पुत्र या पुत्री बन सकते हैं।" लोग, यह एक अद्भुत विचार है. जॉन ने कहा कि यदि आप एक यहूदी किशोर किसान लड़की, जो कुंवारी थी, के बच्चे के अलौकिक जन्म के तथ्य को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं, तो आप स्वयं ईश्वर की अलौकिक पुन: रचना बन सकते हैं। उनका जन्म और आपका पुन: सृजन उतना ही ईश्वर का है जितना कि दूसरा। आप एक के बिना दूसरा नहीं रख सकते है। देहधारण केवल शुष्क धर्मविज्ञान नहीं है, यह शुभ सन्देश है कि परमेश्वर हमारे पास आए हैं। आप परमेश्वर के पुत्र या पुत्री बन सकते हैं।" लोग, यह एक अद्भुत विचार है. जॉन ने कहा कि यदि आप एक यहूदी किशोर किसान लड़की, जो कुंवारी थी, के बच्चे के अलौकिक जन्म के तथ्य को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं, तो आप स्वयं ईश्वर की अलौकिक पुन: रचना बन सकते हैं। उनका जन्म और आपका पुन: सृजन उतना ही ईश्वर का है जितना कि दूसरा। आप एक के बिना दूसरा नहीं रख सकते है। देहधारण केवल शुष्क धर्मविज्ञान नहीं है, यह शुभ सन्देश है कि परमेश्वर हमारे पास आए हैं। आप एक के बिना दूसरा नहीं रख सकते है। देहधारण केवल शुष्क धर्मविज्ञान नहीं है, यह शुभ सन्देश है कि परमेश्वर हमारे पास आए हैं। आप एक के बिना दूसरा नहीं रख सकते है। देहधारण केवल शुष्क धर्मविज्ञान नहीं है, यह शुभ सन्देश है कि परमेश्वर हमारे पास आए हैं।

अब परमेश्वर के देह में आने का अर्थ क्या है, इसके बारे में कुछ व्यावहारिक शिक्षाएँ।

1. <u>अगर मैं अवतार स्वीकार करता हूं, तो यह मेरे देवता को देखने के तरीके को प्रभावित करेगा</u>. अगर मुझे विश्वास है कि यीशु मांस में आने वाला परमेश्वर था, तो यह मेरे परमेश्वर को देखने के तरीके को प्रभावित करता है। याद रखें हम सभी भगवान को जानना चाहते हैं। हम उस इच्छा के साथ पैदा हुए हैं। अब यूहन्ना ने कहा कि तुम परमेश्वर को जान सकते हो। आपको बस इतना करना है कि यीशु को देखें। आपको प्रकाश की झिलमिलाहट को देखते रहने की आवश्यकता नहीं है। आपको केवल ऊपर सितारों को देखने और कहने की ज़रूरत नहीं है, ठीक है, एक भगवान होना चाहिए। मैं भगवान को देख सकता हूँ।

   यूहन्ना अध्याय 12, पद 44 और 45 में, यीशु ने कहा, "जब तुम मेरी ओर देखते हो, तो उसकी ओर देखते हो जिसने मुझे भेजा है।" यूहन्ना अध्याय 8 में, यीशु ने कहा, "यदि तुम मुझे जानते हो, तो पिता को जानते हो।" यूहन्ना, अध्याय 14, श्लोक 6 में, उन्होंने कहा, "मैं मार्ग और सत्य और प्रकाश हूँ", और यूहन्ना 7 में, वे कहते हैं, "यदि तुम वास्तव में मुझे जानते, तो तुम पिता को जानते।" आपको परमेश्वर के बारे में आश्चर्य करने की आवश्यकता नहीं है। आप यीशु के जीवन में परमेश्वर को देख सकते हैं। परमेश्वर ने कहा कि तुम मेरे बारे में कभी भी ऐसा प्रकटीकरण नहीं पाओगे जो दूर से भी वैसा ही होगा जैसा मैं तुम्हें नासरत के यीशु में दिखाऊंगा। जब आप अवतार में विश्वास करते हैं तो यह आपके देवता को देखने के तरीके को बदल देता है।

2. देहधारण मेरे विनम्रता को देखने के तरीके को आकार देता है। कीमती कुछ अपवादों के साथ, हममें से अधिकांश को दीन होने की आवश्यकता है, और नियमितता के साथ दीन होना चाहिए। हम गर्व के साथ संघर्ष करते हैं और अवतार पर ध्यान केंद्रित करने की तुलना में कुछ चीजें हमें अपने गौरव का मुकाबला करने में मदद करती हैं। इसके बारे में सोचो। ब्रह्मांड के राजा दुनिया में कैसे आए?

   इतिहास ने हमारे लिए दर्ज किया है कि एक बार सिकंदर महान ने एक शहर पर विजय प्राप्त की और उसने इस तरह से उस शहर में प्रवेश किया। परेड का नेतृत्व करने वाला एक व्यक्ति फूल फेंक रहा था, उसके बाद 200 हाथियों को लेखकों के साथ, फिर 200 चित्रित ऊंटों द्वारा, फिर 200 घुड़सवारों को पीछे की ओर सवारी करते हुए 40 काले घोड़ों द्वारा खींचे गए सुनहरे रथ का सामना करना पड़ा और 40 काले घोड़ों के रथ को खींचने के बाद 200 पालतू शेर लाए गए ऊपर पीछे। उस स्वर्ण रथ के मध्य में एक हाथी दांत का सिंहासन था और उसके ऊपर सिकंदर महान बैठा था। इसे ही मैं एक प्रवेश द्वार कहता हूँ और मुझे लगता है कि यदि आप विश्व के राजा हैं, तो आप इसी तरह से प्रवेश करते हैं।

   लेकिन ब्रह्मांड के राजा ने कैसे प्रवेश किया? वह उस कुंवारी, किशोर किसान महिला के लिए पैदा हुआ था, एक छोटे से शहर में, एक अस्तबल में, जो उसके सांसारिक पिता के रूप में लार से लदी एक खिला गर्त में ले जाया गया था और जोशुआ के अरामीक में सामान्य नाम दिया गया था। ग्रीक जीसस, और किसी ने भी बुद्धिमान पुरुषों पर ध्यान नहीं दिया। यह विडंबना है ना? बिना सहायता के पण्डित उसे ढूँढ़ भी नहीं सकते थे। फिलिप्पियों 2:6 में पौलुस ने यीशु के बारे में बात करते हुए कहा, "जिसने स्वभाव में होते हुए भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा, परन्तु दास का रूप धारण करके अपने आप को कुछ भी न समझा" और फिलिप्पियों 2: 5 कहते हैं? "तुम्हारा स्वभाव वही होना चाहिए जो मसीह यीशु का है।"

3. देहधारी परमेश्वर का देहधारण मेरे नश्वरता को देखने के तरीके को बदल देता है। हम आमतौर पर यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान को देखते हैं और कहते हैं, मैं जानता हूं कि मैं कब्र से आ सकता हूं और मुझे पता है कि मैं भगवान के पास जा सकता हूं। मैं उस सब से सहमत हूं, लेकिन यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान से पहले यह संभव नहीं था, उन्होंने साबित किया कि जब वह हमारे पास आए तो नश्वरता को पाला जा सकता है। इससे हमें यह साबित हुआ कि नश्वरता और अमरता को पाला जा सकता है, पार किया जा सकता है, जब परमेश्वर देह में आया था।

अवतार की अवधारणा से बड़ी, अधिक आश्चर्यजनक, अधिक आश्चर्यजनक अवधारणा कोई नहीं है। यह हमारी आशा है, यह वह है जिससे हम चिपके रहते हैं.अमेजिंग ग्रेस #1069, स्टीव फ्लैट 7-19-1992 से अनुकूलित

औचित्य

हमारे स्वयं के किसी योग्यता या शक्ति के माध्यम से, केवल क्रूस के माध्यम से, हमें प्रायश्चित (प्रायश्चित) और क्षमा प्रदान की जाती है। क्या आप इस पर विश्वास करोगे? हमें क्षमा और धर्मी ठहराए जाने का अवसर दिया गया है!

- न्यायसंगत होने का क्या अर्थ है? शब्दकोश में कई तरह के अर्थ हैं, लेकिन मूल रूप से इसका मतलब है, "बस खड़े रहना"। यह न्याय को संदर्भित करता है। आप दोषी नहीं, निंदा से मुक्त और निर्दोष पाए जाएंगे। यही औचित्य की अवधारणा है।
- क्षमा हमारे ऋणों का निवारण करती है --- प्रायश्चित। क्षमा हमारे दंड के दायित्व को रद्द कर देती है --- प्रायश्चित। लेकिन धर्मी ठहराना हमें एक अपराध-मुक्त संबंध, सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सामने एक सही स्थिति प्रदान करता है। यह और भी अविश्वसनीय है।
- यह कैसे होता है और हमारे संदर्भ में इसका क्या अर्थ है? निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर मदद कर सकते हैं।

<u>हमारे औचित्य का स्रोत क्या है?</u>यदि कोई परमेश्वर के सामने खड़ा होता है, तो उसके औचित्य का स्रोत क्या है? यह उनके प्रायश्चित और प्रायश्चित के समान स्रोत है। जैसा कि रोमियों में कहा गया है, यह परमेश्वर का अनुग्रह है। "सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं, और उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है सेंतमेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।" (रोमियों 3:23-24) संयोग से, अनुग्रह के लिए यूनानी शब्द चारिस है जिसका अर्थ है उपहार। मैं एक उपहार से न्यायसंगत हूं। वह अनुग्रह है। वह उपहार क्या और कहाँ से आया? यह यीशु का उपहार है। "परन्तु परमेश्वर हम पर अपना प्रेम इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे, तब मसीह हमारे लिये मरा। तो अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरकर हम उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे।" (रोमियों 5:8-9)

किसका खून? क्रूस पर यीशु का लहू। जब कि हम उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्वर के प्रकोप से हम और कितना अधिक बचेंगे! हम क्रोध से बच गए हैं, यही प्रायश्चित है। अब हम उसी उपहार, यीशु मसीह के लहू के द्वारा धर्मी ठहराए गए हैं। हम उसी स्रोत द्वारा धर्मी ठहराए जाते हैं जो हमें क्षमा करता है। वही स्रोत हमें परमेश्वर के सामने सही स्थिति प्रदान करता है। इसे कभी मत भूलना।

हमारे कुछ समय तक ईसाई रहने के बाद कुछ लोग अपने अच्छे जीवन के बारे में सोच सकते हैं, लोगों ने मदद की, सेवाओं में भाग लिया, प्रार्थना की और अगर वे सावधान नहीं हैं, तो वे अपने औचित्य के सच्चे स्रोत को भूल जाते हैं। यह उनका काम नहीं है, यह वे सभाएँ नहीं हैं जिनमें उन्होंने भाग लिया है और यहाँ तक कि वे प्रार्थनाएँ भी नहीं हैं जो उन्होंने की हैं। ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे वे औचित्य अर्जित कर सकें। यह यीशु मसीह का लहू है जो उन्हें धर्मी बनाता है। यह रोमियों 3 में स्पष्ट किया गया है "क्योंकि हम ने पहिले यहूदियों और यूनानियों दोनों पर दोष लगाया है, कि वे सब पाप के आधीन हैं। जैसा लिखा है, कि कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं;'" (पद 9-10) और "इस कारण व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके साम्हने धर्मी नहीं ठहरेगा, क्योंकि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहिचान होती है" (पद 20)। तुम देखते हो धार्मिकता का स्रोत यीशु मसीह का लहू है,

<u>औचित्य का क्या अर्थ है?</u>"इसलिये हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं, कि मनुष्य व्यवस्था के कामों के बिना विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है।" (रोमियों 3:28) यह वह नहीं है जो मनुष्य करता है; मसीह ने यही किया! "मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं परन्तु यीशु मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरता है, हम ने भी मसीह यीशु पर विश्वास किया है, कि हम व्यवस्था के कामों से नहीं, पर मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरें, क्योंकि परमेश्वर के कामों से व्यवस्था कोई प्राणी धर्मी नहीं ठहराया जाएगा।" (गलातियों 2:16)

वहाँ स्रोत है। हम उस स्रोत में कैसे टैप करते हैं? क्या साधन है? "क्योंकि हम मानते हैं कि एक आदमी धर्मी है" (अगले दो शब्द क्या हैं) "कानून का पालन करने के अलावा विश्वास से।" (रोमियों 3:28) "यह जानकर कि मनुष्य व्यवस्था के पालन से नहीं, परन्तु यीशु मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरता है।" (गलतियों 2:16) "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है।" (इफिसियों 2:8) हमारे धर्मी ठहराए जाने का माध्यम क्या है? हमारे द्वारा उस स्रोत से संबंधक क्या है? यह विश्वास है। लेकिन, विश्वास क्या है?

विश्वास की परमेश्वर की परिभाषा बाइबिल में दर्ज है। "अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है" (इब्रानियों 11:1)। यह निश्चित होना है कि हम किस चीज की आशा करते हैं, निश्चित रूप से जिसे हम देख नहीं सकते। विश्वास एक पूर्ण और जीवन बदलने वाला विश्वास है जो शारीरिक रूप से नहीं देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, हम भगवान को नहीं देख सकते हैं लेकिन हम उनकी करतूत के सबूत देखते हैं। हमारे कमजोर और सीमित मानव मन में हम ईश्वर को नहीं देख सकते; लेकिन हम जानते हैं कि भगवान मौजूद है। क्यों? इस सबूत के कारण कि हमारे आस-पास हमें बिना किसी शक के छाया के विश्वास हो गया है कि हम क्या देख सकते हैं और वह ईश्वर का अस्तित्व है। वह विश्वास है।

हमने यीशु को तब नहीं देखा जब वह यहाँ पृथ्वी पर था। हमने उसे किसी भी प्रकार के दर्शन में नहीं देखा है, लेकिन हमें पूरा यक़ीन है कि वह जीवित था। कि उसने सुसमाचारों में दर्ज चमत्कार किए, कि उसने भविष्यवाणी को पूरा किया, कि वह उस क्रूस पर मरा और कि वह कब्र से जी उठा। हमने कभी भी अपनी आंखों से उसमें से कुछ भी नहीं देखा, लेकिन हम इसे जानते हैं और वह विश्वास है। धर्मी ठहराए जाने के बारे में बाइबल हमें जो बता रही है वह यह है कि विश्वास हमारा संबंधक है। विश्वास वह छोटा सा हिस्सा है जिसे हम नियंत्रित करते हैं जो यह निर्धारित करता है कि हम उस महान शक्ति स्रोत का उपयोग करते हैं या नहीं जो न केवल हमें क्षमा करेगा, बल्कि हमें न्यायोचित ठहराएगा।
आइए विद्युत प्रकाश चित्रण देखें। दीवार का स्विच ऑन करने से कमरे में रोशनी आ जाती है, अंधेरा दूर हो जाता है। प्रकाश के लिए शक्ति स्रोत क्या है? यह कहीं मील दूर एक जनरेटर है। कुछ डायनेमो प्लांट जो बिजली पैदा कर रहे हैं, लेकिन हमारे पास एक स्विच है। यदि इसे चालू किया जाता है, तो प्रकाश उत्पन्न होता है। यदि इसे चालू करने का कोई प्रयास नहीं किया जाता है, तो कोई प्रकाश उत्पन्न नहीं होता है। बिजली के स्रोत की परवाह किए बिना, चाहे बिजली कितनी भी मजबूत क्यों न हो, जब तक हम स्विच को चालू करके बिजली से कनेक्ट करना नहीं चुनते हैं, तब तक हमें प्रकाश का लाभ नहीं मिलता है। विश्वास हमारा संबंधक है जो हमें धर्मी ठहराने की अनुमति देता है लेकिन हमें इसे चालू करना चाहिए।

विश्वास एक जीवन बदलने वाला भरोसा है। इसकी अवधारणा है जब आप यीशु मसीह के बारे में सुनते हैं कि वह कौन है और उसने क्या किया है। बाइबल कहती है कि विश्वास सुनने से और सुनना परमेश्वर के वचन से होता है। तभी गर्भाधान शुरू होता है। फिर वह विश्वास तब तक बढ़ता है जब तक कि वह हमें पश्चाताप की ओर न ले जाए। यही हमारी जीवन शैली को बदल रहा है। विश्वास, वास्तविक विश्वास, हमें मुड़ने की ओर ले जाता है। हम जहां हैं, वहीं नहीं रहने देंगे। वह पश्चाताप हमें एक नए जन्म की ओर ले जाएगा। इफिसियों 1:13 में पौलुस कहता है, कि तुम ने सत्य का वचन सुनकर विश्वास किया। पतरस ने प्रेरितों के काम 2:38 में उस भीड़ से जो उसे सुन रही थी, कहा, "पश्चाताप करो।" प्रेरितों के काम 20:21 में पौलुस ने इफिसुस के मसीहियों से कहा, क्या तुम्हें स्मरण नहीं कि मैं ने तुम्हें मन फिराव का सन्देश सुनाया था। वास्तविक पश्चाताप का परिणाम परिवर्तन होता है, पुराने जीवन की मृत्यु। हालाँकि, वह विश्वास आज्ञाकारिता की ओर ले जाता है। हम मरे हुए पुराने व्यक्तित्व को एक पुनर्जन्म के द्वारा दफनाते हैं,

"सो यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है; पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं।" (2 कुरिन्थियों 5:17) विश्वास जीवन बदलने वाला है, जीवन बदलने वाला भरोसा है। केवल यह स्वीकार करना कि परमेश्वर का अस्तित्व है, विश्वास को कम काम नहीं करता है और याकूब 2:26 कहता है कि कर्म के बिना विश्वास मरा हुआ है। ऐसा नहीं है कि विश्वास कर्म है, परन्तु सच्चा विश्वास कर्म उत्पन्न करेगा। वह संपूर्ण जीवन बदलने वाला विश्वास हमें औचित्य के सर्वशक्तिमान स्रोत से जोड़ता है।

औचित्य के प्रभावों के बारे में क्या?हम ईसाई हैं, क्षमा किए गए हैं, धर्मी ठहराए गए हैं और परमेश्वर के सामने एक धर्मी संबंध में खड़े हैं। इस धर्मी स्थिति के प्रभावों के बारे में क्या? पहला, समस्त मानवीय हैसियत वास्तव में समाप्त कर दी जाती है; नस्ल, राष्ट्रीयता, लिंग, वित्तीय मूल्य और मनुष्य के बीच स्थिति। "क्योंकि तुम सब मसीह यीशु पर विश्वास करने के द्वारा परमेश्वर के पुत्र हो। क्योंकि तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो: यदि तुम मसीह के हो, तो इब्राहीम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो।" (गलतियों 3:26-29) यदि आप परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी ठहराए गए हैं, तो मनुष्य की दृष्टि में धर्मी ठहराए जाने के बारे में या मनुष्य क्या सोचता है, इसकी चिंता न करें। केवल इस बात की चिंता करें कि परमेश्वर क्या सोचता है।

दूसरे, आप सर्वशक्तिमान परमेश्वर के पास स्वतंत्र रूप से और साहसपूर्वक और अभी जा सकते हैं! सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना करना एक विशेषाधिकार है। यह एक विशेषाधिकार है जिसे आप विश्वास के द्वारा यीशु के लहू के द्वारा धर्मी ठहराए जाने पर स्वीकार करते हैं। "इसलिए आओ हम अनुग्रह के सिंहासन के पास हियाव से आएं, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।" (इब्रानियों 4:16) यदि यह सिर्फ दया होती, तो हम परमेश्वर की उपस्थिति में डर रहे होते लेकिन हम धर्मी ठहराए गए हैं। अब, परमेश्वर कहते हैं, आप अनुग्रह के सिंहासन के पास आत्मविश्वास के साथ जा सकते हैं। हम सर्वशक्तिमान परमेश्वर के बारे में बात कर रहे हैं। जिन्होंने इस ब्रह्मांड में कम से कम एक खरब आकाशगंगाएँ डालीं, जिनमें से एक मिल्की वे, हमारी आकाशगंगा है। वहाँ एक अरब से अधिक तारे हैं और उन छोटे तारों में से एक के चारों ओर, नौ ग्रहों वाला एक सौर मंडल है और उन नौ में से एक पर ग्रह, पांच अरब से अधिक लोग हैं और हर इंसान उनमें से सिर्फ एक है। हम पापी हैं जो निडर होकर सर्वशक्तिमान परमेश्वर के पास जा सकते हैं। वह औचित्य का प्रभाव है।

अन्त में आप न्याय के दिन परमेश्वर के सामने बिना किसी भय के खड़े हो सकते हैं। सबसे डरावने शब्द जो कुछ लोग सुन सकते हैं वे हैं "और जैसे कि मनुष्यों के लिए एक बार मरना परन्तु उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है।" (इब्रानियों 9:27) जो आज्ञाकारी हैं और इसलिए धर्मी ठहराए जाते हैं, उन्हें निम्नलिखित में आराम मिलता है: "जीवन प्रगट हुआ, और हम ने देखा, और गवाही देते हैं, और तुम्हें उस अनन्त जीवन का समाचार देते हैं, जो पिता के पास था, और उन पर प्रगट हुआ। हम।" (1 यूहन्ना 1:2) "वह कौन है जो दण्ड देता है? वह मसीह है जो मरा, और फिर जी भी उठा है, जो परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान है, और हमारे लिये बिनती भी करता है" (रोमियों 8:34) और "इस कारण जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार करने में समर्थ है, क्योंकि वह उनकी बिनती करने को सर्वदा जीवित है।" (इब्रानियों 7: 25) इन दिनों में से एक दिन हम ईश्वर के सिंहासन के सामने खड़े होंगे। क्या हम तैयार होंगे? क्या हम धर्मी ठहरेंगे?

1 यूहन्ना 2:1, "हे मेरे बालकों, मैं तुम्हें यह इसलिये लिखता हूं, कि तुम पाप न करो। परन्तु यदि कोई पाप करे, तो हमारे पास एक है, जो हमारे बचाव में पिता से बात करता है..." रोमियों 8:34, "कौन है?" वह जो दण्ड देता है? मसीह यीशु जो मर गया... उस से भी बढ़कर जो जी उठा है... परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान है, और हमारे लिये बिनती भी करता है।" इब्रानियों 7:25, "जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार करने में समर्थ है, क्योंकि वह उनके लिये बिनती करने को सर्वदा जीवित है।"

प्रकाशितवाक्य 3:5 कहता है, जो जय पाए वह श्वेत वस्त्र पहिनेगा, क्योंकि वे योग्य हैं। इन दिनों में से एक दिन हम परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े होंगे। मुझे आशा है कि हमें एक सफेद वस्त्र दिया जाएगा। इसलिए नहीं कि हम स्वच्छ हैं, बल्कि इसलिए कि हमने पूरी तरह से और विश्वासपूर्वक उस पर भरोसा किया है जो हमें शुद्ध करेगा और हमें सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सामने खड़ा होने देगा। हम और क्या माँग सकते हैं? इस ब्रह्मांड में संभवतः क्या बेहतर हो सकता है?स्टीव फ्लैट, अमेजिंग ग्रेस अमेजिंग ग्रेस लेसन #1067

आराधन

प्रायश्चित पर किए गए अध्ययन में हम पाते हैं कि पाप मनुष्य, पापी और सर्वशक्तिमान ईश्वर के बीच ऋण पैदा करता है जो निष्पाप है। कर्ज चुकाना होगा। पापी के पास भुगतान के रूप में देने के लिए कुछ भी नहीं है। पाप केवल मानवता और देवता के बीच एक ऋण नहीं बनाता है; यह परमेश्वर के क्रोध को भी भड़काता है। परमेश्वर पवित्र और धर्मी है, इसलिए, पाप उसके स्वभाव के बिल्कुल विपरीत है। वह पाप से घृणा करता है और जब पाप परमेश्वर के निकट आता है, तो यह कुछ ऐसा है जो उसे क्रोधित करता है। आदम को देखो। उसने परमेश्वर की आज्ञा के बदले अपनी इच्छा पूरी करके पाप किया। नतीजतन, आदम को परमेश्वर की उपस्थिति से और अदन से बाहर निकाल दिया गया, वह स्थान जहाँ परमेश्वर ने उसे मूल रूप से रखा था। प्रेरित होकर पौलुस हमें बताता है "सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं" (रोमियों 3:23), "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है" (रोमियों 6:23) और "परमेश्वर का क्रोध उन मनुष्यों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधार्मिकता से दबाए रखते हैं।" (रोमियों 1:18) थोड़ी देर बाद पौलुस कहता है, “तू अपने हठ और हठीले मन के कारण परमेश्वर के प्रकोप के दिन के लिये, जब उसका धर्ममय न्याय प्रगट होगा, अपने ऊपर क्रोध जमा करता है। परमेश्वर "हर एक को उसके किए के अनुसार बदला देगा।" (रोमियों 2:5-6) फलस्वरूप "इन्हीं बातों के कारण परमेश्वर का क्रोध आज्ञा न मानने वालों पर भड़कता है।" (इफिसियों 5:6; कुलुस्सियों 3:6 में भी दोहराया गया है) 18) थोड़ी देर बाद पौलुस कहता है, "अपने हठ और हठीले मन के कारण, तुम परमेश्वर के प्रकोप के दिन के लिये, जब उसका सच्चा न्याय प्रगट होगा, अपने ऊपर क्रोध जमा कर रहे हो। परमेश्वर "हर एक को उसके किए के अनुसार बदला देगा।" (रोमियों 2:5-6) फलस्वरूप "इन्हीं बातों के कारण परमेश्वर का क्रोध आज्ञा न मानने वालों पर भड़कता है।" (इफिसियों 5:6; कुलुस्सियों 3:6 में भी दोहराया गया है) 18) थोड़ी देर बाद पौलुस कहता है, "अपने हठ और हठीले मन के कारण, तुम परमेश्वर के प्रकोप के दिन के लिये, जब उसका सच्चा न्याय प्रगट होगा, अपने ऊपर क्रोध जमा कर रहे हो। परमेश्वर "हर एक को उसके किए के अनुसार बदला देगा।" (रोमियों 2:5-6) फलस्वरूप "इन्हीं बातों के कारण परमेश्वर का क्रोध आज्ञा न मानने वालों पर भड़कता है।" (इफिसियों 5:6; कुलुस्सियों 3:6 में भी दोहराया गया है)

परमेश्वर किन चीज़ों को पाप या अनाज्ञाकारिता के रूप में वर्गीकृत करता है? "परन्तु जैसा पवित्र लोगों को उचित है, वैसा तुम में व्यभिचार, और हर प्रकार के अशुद्ध काम, या लोभ की चर्चा तक न हो; न निर्लज्जता, न मूर्खता की बातें, न ठट्ठा, जो शोभा नहीं देता, परन्तु धन्यवाद ही दिया जाता है। यह तुम जानते हो।" कि किसी व्यभिचारी, अशुद्ध मनुष्य, और लोभी मनुष्य का, जो मूर्तिपूजक है, मसीह और परमेश्वर के राज्य में कोई मीरास नहीं।” (इफिसियों 5:3-5) "परन्तु अब तुम आप ही इन सब को अर्थात क्रोध, रोष, बैरभाव, निन्दा, और अपके मुंह से गंदी भाषा बोलना छोड़ दो। एक दूसरे से झूठ मत बोलो, क्योंकि तुम ने बूढ़े को उतार डाला है।" उसके कर्मों के साथ। ” (कुलुस्सियों 3:8-9)

परमेश्वर का क्रोध पाप (अवज्ञा) के विरुद्ध है। वह क्रोध हमारे वर्तमान समय में कभी-कभी प्रकट होगा जब परमेश्वर अपना पैर नीचे रखता है और रेखा खींचता है और कहता है कि मैं पाप को आगे नहीं बढ़ने दूंगा और यह पृथ्वी को घेरने के लिए क्या कर रहा है। परन्तु इससे भी अधिक, परमेश्वर का क्रोध पूरी तरह से तब प्रकट होगा जब यीशु फिर से आएगा और अंतिम न्याय होगा। बाइबल कहती है कि जो लोग प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य थे वे उसके साथ रहने के लिए जाएंगे और साथ ही साथ यह भी कहता है कि जो विश्वासयोग्य नहीं हैं उन्हें उस स्थान में फेंक दिया जाएगा जिसे बाइबल मूल भाषा में गेहन्ना कहती है। गेहन्ना यरूशलेम की दीवारों के बाहर एक कचरे का ढेर था जो खुला था और लगभग लगातार जल रहा था। उस प्रकार के सन्दर्भ में आप की तुलना में अनन्त दण्ड है। बाइबल रोने का उपयोग करती है,

बहुत से लोग हमारे परमेश्वर के क्रोध को प्रदर्शित करने की धारणा से घृणा करते हैं। ये लोग विश्वास करते हैं कि एक परमेश्वर है, वे विश्वास करते हैं कि परमेश्वर प्रेम है, वे विश्वास करते हैं कि परमेश्वर दयालु है, और वे यीशु मसीह के छुटकारे के कार्य में विश्वास करते हैं। लेकिन स्पष्ट रूप से, वे सोचते हैं कि परमेश्वर के क्रोध का सिद्धांत उनके नीचे है या वे इस झूठ को स्वीकार करने लगे हैं कि क्रोध परमेश्वर के योग्य नहीं है।

अन्य लोग क्रोध के बारे में सोचते हैं जब क्रोध का उल्लेख किया जाता है, किसी को लाल दिखाई देता है और बिल्कुल निडर हो जाता है। वे निश्चित रूप से कहते हैं कि भगवान ऐसा नहीं करेंगे। 17वीं शताब्दी में जोनाथन एडवर्ड्स ने देखा कि ईश्वर मानवता के साथ खिलवाड़ कर रहा है, उसने मानवता को खुली आग पर पकड़ रखा है। परन्तु ये परमेश्वर के क्रोध के बाइबल आधारित चित्रण नहीं हैं। इसके विपरीत, बाइबल में यह कहा गया है कि परमेश्वर का क्रोध कभी नियंत्रण से बाहर नहीं होता, न ही उसका क्रोध क्रूर होता है।

जब परमेश्वर आता है तो उसके क्रोध को इस प्रकार चित्रित किया जा सकता है:

1. अदालती. यह सिद्ध न्याय करने वाले सर्वसिद्ध न्यायी का कोप है। "परन्तु अपनी कठोरता और पश्चाताप के मन के अनुसार तू ने क्रोध के दिन और परमेश्वर के धर्ममय न्याय के प्रकट होने के दिन अपने लिये जलजलाहट रख छोड़ी है।" (रोमियों 2:5) आप देखते हैं कि परमेश्वर का न्याय और उसका क्रोध धर्मी होने जा रहा है। एक विवेकपूर्ण, ईमानदार न्यायी द्वारा उस सजा के योग्य व्यक्ति के

खिलाफ सजा सुनाए जाने से परमेश्वर का क्रोध न अधिक उग्र होगा, और न ही अधिक क्रूर होगा। यह नियंत्रण से बाहर नहीं है। यह न्यायिक है।

2. चुना. "कोई तुम्हें व्यर्थ बातों से धोखा न दे, क्योंकि इन ही कामों के कारण परमेश्वर का क्रोध आज्ञा न मानने वालों पर भड़कता है।" (इफिसियों 5:6) परमेश्वर का क्रोध अवज्ञाकारी पर आता है। उन्होंने आज्ञाकारिता के बजाय अपनी इच्छाओं को चुना "शरीर के कार्य स्पष्ट हैं, जो हैं: व्यभिचार, अस्वच्छता, अशिष्टता, मूर्तिपूजा, जादू-टोना, घृणा, विवाद, ईर्ष्या, क्रोध का प्रकोप, स्वार्थी महत्वाकांक्षाएं, मतभेद, विधर्म, ईर्ष्या, हत्या, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, और ऐसी ही और बातें, जिनके विषय मैं तुम से पहिले ही कह देता हूं, जैसा पहिले कह भी चुका हूं, कि ऐसे ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।" (गलतियों 5:19-21) कुलुस्सियों 3:5-8 उपरोक्त सूची में निम्नलिखित जोड़ता है: जुनून, बुरी इच्छा, लोभ, क्रोध, द्वेष, निन्दा और आपके मुंह से गंदी भाषा। इसलिए,

भगवान ने हमें इंसान बनाया। हम कमजोर हैं, हम कमजोर हैं, और हम में से हर कोई इस हद तक परिपक्व है कि जब हम सही और गलत में अंतर करते हैं, तो हम आम तौर पर पाप करना चुनते हैं। वास्तव में, रोमियों 3:23 कहता है, "सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" तो, क्या कोई वास्तव में उन चुनावों के लिए जिम्मेदार हो सकता है जो, उनकी कमजोरी में, परमेश्वर जानता है कि वे करने जा रहे हैं। जब हम सब पाप करते हैं तो वह वास्तव में उन्हें उनके पाप के लिए नरक (गेहन्ना) में कैसे भेज सकता है? वह किस प्रकार का चुनाव है? यहीं पर हमारा शब्द प्रायश्चित आता है।

परमेश्वर हम में से एक को भी उसके क्रोध से पीड़ित नहीं देखना चाहता है और यह जानते हुए भी कि उसने हमें चुनने की क्षमता देकर हम सभी को कमजोर बना दिया है। हमारे पास एक विकल्प है कि "जो पुत्र (यीशु) पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है, परन्तु जो पुत्र को नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, क्योंकि परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।" (यूहन्ना 3:36) "परन्तु परमेश्वर हमारे प्रति अपने प्रेम को इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे, तब मसीह हमारे लिये मरा। इससे कहीं अधिक, अब उसके लहू के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के बाद, हम उसके द्वारा क्रोध से बचेंगे। " (रोमियों 5:8-9) आप देखते हैं कि बाइबल इसे स्पष्ट करती है। जब कोई यीशु में विश्वास करना चुनता है, सुसमाचार का पालन करता है, एक ईसाई के रूप में बपतिस्मा के पानी से ऊपर आता है और मसीह की शिक्षाओं का पालन करना जारी रखता है, तो वे परमेश्वर के क्रोध से बच जाते हैं। लेकिन यीशु कैसे फर्क करता है? मसीह कहाँ आता है? वह हमारे लिए प्रायश्चित करता है।

प्रायश्चित शब्द का अर्थ है क्रोध को हटाना या उसे उछलने देना। दूसरे रूप में इस शब्द का प्रयोग ढाल को परिभाषित करने के लिए किया जाता था जिसे एक योद्धा युद्ध में ले जाएगा। आप एक ढाल के साथ क्या करेंगे? जब दुश्मन धनुष की डोरी को पीछे खींचेगा और एक तीर को उड़ने देगा, तो ढाल आपको नुकसान से बचाने के लिए उसे विक्षेपित करने के लिए ऊपर जाएगी। जब एक तलवार नीचे गिरती है तो ढाल ऊपर उठती है ताकि वह हवा से टकराए और वह ढाल को नष्ट कर दे, परन्तु तुम बच जाओगे। अब क्या आप यीशु के साथ संबंध देखना शुरू करते हैं?

यीशु ने हमारे क्रोध को टाल दिया। "वही हमारे पापों का प्रायश्चित है, और केवल हमारे ही नहीं, वरन सारे जगत के पापों का भी।" (1 यूहन्ना 2:2) क्या वह कुछ नहीं है? वह ढाल है; वह हमारे पापों के लिए, सारे संसार के पापों के लिए क्रोध को दूर करने वाला है। "अपने अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंतमेंत धर्मी ठहराए जाते हैं, जिसे परमेश्वर ने विश्वास के द्वारा उसके लोहू के प्रायश्चित्त के लिये ठहराया, कि वह अपक्की धार्मिकता प्रगट करे, क्योंकि परमेश्वर ने पहिले किए हुए पापोंको अपनी सहनशीलता से छोड़ दिया था।" (रोमियों 3:24)। "प्यार इसमें नहीं है कि हम भगवान से प्यार करते हैं, बल्कि यह है कि उसने हमसे प्यार किया और अपने बेटे को हमारे पापों के प्रायश्चित (एनआईवी में प्रायश्चित बलिदान) के लिए भेजा।" 1 यूहन्ना 4:10) क्या यह महान नहीं है? यीशु ने न केवल परमेश्वर को मेरा ऋण चुकाया, [मेरे पाप के कारण हुए ऋण का प्रायश्चित किया],

अब इसे सब एक साथ टुकड़े करते हैं। जब यीशु क्रूस पर लटका हुआ मर रहा था तो उसने कहा, "एलोई, एलोई, लमा सबचथानी? मेरे भगवान, मेरे भगवान तुमने मुझे क्यों छोड़ दिया?" उस क्षण अनंत काल में एकमात्र समय के लिए, परमेश्वर पिता ने पुत्र को त्याग दिया था। उन्होंने उसकी ओर पीठ कर ली थी। यीशु, जो ईश्वर के रूप में और दुनिया के निर्माण से पहले, हमेशा ईश्वर के साथ पूर्ण संवाद रखता था, अब उसकी उपस्थिति को महसूस नहीं कर सकता था। क्यों नहीं? क्योंकि, वह हमारा प्रायश्चित कर रहा था। वह उस अलगाव में परमेश्वर के क्रोध को उठा रहा था और हमारे पापों को दफन कर रहा था ताकि जब हम पाप के लिए मर कर सुसमाचार के आज्ञाकारी उस क्रूस पर आएं, उसके साथ एक नई सृष्टि को जन्म देने और उसकी धार्मिकता का दावा करने के लिए बपतिस्मा में दफन हो जाएं, तो हम मुक्त हो जाएंगे पाप से। "इसलिये यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है; पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं।

यह कैसे हो सकता है? प्रणाम करके। "क्योंकि परमेश्वर ने उसे जिस में पाप न था, हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।" (2 कुरिन्थियों 5:21) जिसमें कोई पाप नहीं था वह पाप बन गया और ऐसा करने से परमेश्वर का क्रोध दूर हो गया ताकि हम जीवित रह सकें।

यह सब मेरे लिए क्या मायने रखता है?

1. मैं एक पापी हूं।
2. पाप का अंत बुरा ही होता है।
3. मेरे पास अपना पाप दूर करने के लिए कुछ भी नहीं है।
4. जब तक कुछ नहीं किया जा सकता, मैं नष्ट हो जाऊंगा।
5. यीशु परमेश्वर थे और उन्हीं में सब कुछ रचा गया था।
6. यीशु देहधारी हुआ और मानवजाति के बीच रहा।
7. यीशु पाप रहित था।

8. पृथ्वी पर आने का यीशु का उद्देश्य एक प्रायश्चित बलिदान और हमारे पापों का प्रायश्चित बनना था।
9. यीशु ने अपने मिशन को तब पूरा किया जब उसने स्वेच्छा से खुद को क्रूस पर चढ़ाने के लिए दे दिया।
10. उसके द्वारा और उसमें; अर्थात्, मसीह में, मैं पाप और परमेश्वर के क्रोध से मुक्त हो सकता हूँ।
11. मुझे उनके सुसमाचार के प्रति आज्ञाकारी होना चाहिए और उनकी शिक्षा के अनुसार जीना चाहिए।

अमेजिंग ग्रेस लेसन # 1066 स्टीव फ्लैट 7-21-1992

सुलह

बड़े होने पर क्या आपके माता-पिता ने कभी आपको उपहार के रूप में एक बायाँ जूता दिया और आपको बताया कि क्या आप अच्छे हैं, अगले साल हम आगे बढ़ेंगे और आपको इसके साथ जाने के लिए सही जूता देंगे? नहीं, आपने ऐसा कभी अनुभव नहीं किया है। इसका कारण आपने कभी अनुभव नहीं किया है क्योंकि आम तौर पर एक जूता दूसरे के बिना बेकार है; वे एक साथ हैं, है ना?

सुलह दो अलग-अलग चीजों को एक साथ ला रही है। दो चीज़ें जो एक साथ हैं उन्हें अलग नहीं होना चाहिए। जब वे एक साथ वापस लाए जाते हैं तो उन चीजों का समाधान हो जाता है। बाएँ और दाएँ जूते केवल एक साथ होने वाली चीज़ें नहीं हैं।

मनुष्य और ईश्वर भी एक साथ हैं। डेविड ने एक बार कहा था, जैसे हिरन पानी के लिए हांफता है, वैसे ही हे परमेश्वर, मेरी आत्मा तेरे लिए तरसती है। (भजन संहिता 42:1) उसके पुत्र सुलैमान ने कहा कि परमेश्वर तूने हमें हमारे हृदय में अनन्तकाल के लिए रचा है। मनुष्य भगवान के साथ संगति के लिए बनाया गया है। इतिहास में न कभी ऐसा समय आया है और न ही कभी ऐसा समय आएगा जब इस संसार में ईश्वर से डरने वाले और ईश्वर में आस्था रखने वाले अधिक नास्तिक होंगे। ऐसा नहीं है कि हर कोई भगवान पर उस तरह से विश्वास करेगा जैसा उन्हें करना चाहिए, लेकिन भगवान ने हमें इसलिए बनाया है कि हम महसूस करें कि उनके साथ संगति की असीम आवश्यकता है।

परन्तु पाप उस संगति में बाधा बन गया है। रोमियों 3:23 कहता है, "सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" रोमियों 6:23, "पाप की मजदूरी मृत्यु है।" वो शब्द याद है, मौत? इसका मतलब सिर्फ जुदाई है। यह भयानक अलगाव है। परन्तु परमेश्वर ने हमारे पाप के द्वारा उत्पन्न इन सभी समस्याओं को एक ही झटके में हल कर दिया। विडंबना यह है कि उसने उन्हें मृत्युदंड के एक उपकरण, एक रोमन क्रॉस पर हल किया। परमेश्वर ने हमारे लिए पवित्र होना संभव बनाया लेकिन हमारे पाप उस पवित्रता को नष्ट कर देते हैं और हमें निम्नलिखित परिणामों के साथ छोड़ देते हैं:

1. हमारा अलगाव हमें परमेश्वर का ऋणी बना देता है। परमेश्वर ने हमारे पापों का प्रायश्चित करके क्रूस पर उसका समाधान किया। उसने हमारे लिए एक ऋण चुकाया है कि हम अपने लिए भुगतान करने में असमर्थ हैं। प्रायश्चित की अवधारणा 2 कुरिन्थियों 5:21 में लिपटी हुई है, "परमेश्वर ने उसे जिसमें पाप न था, पाप ठहराया" हमारे लिए।

2. हमारे पाप परमेश्वर के दंड और क्रोध को भड़काते हैं। भगवान कहते हैं, मैं इसका ख्याल रखूंगा! क्रूस पर मैं तुम्हें प्रायश्चित्त देने जा रहा हूँ। उस बड़े शब्द का अर्थ केवल क्रोध को दूर करना, उसे विक्षेपित करना है। बाइबल कहती है, 1 यूहन्ना 2:2 कि यीशु मसीह हमारे पापों का प्रायश्चित्त (प्रायश्चित बलिदान) है, और केवल हमारे ही नहीं वरन् सारे जगत के पापों का भी।

3. हमारा पाप हमें परमेश्वर के पास जाने के योग्य नहीं बनाता। भगवान कहते हैं कि मैं इसका ख्याल रखूंगा! "सो जब हम अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे।" (रोमियों 5:9) क्या आप महसूस करते हैं कि वे सारी बातें क्रूस पर घटित हुईं? क्या आपने कभी इस बारे में सोचना बंद किया? आप जिस भारी कर्ज का भुगतान नहीं कर सकते, उसका ध्यान रखा जाता है। हमारे पापों के कारण जो क्रोध परमेश्वर की ओर से हम पर आ रहा है, वह परमेश्वर की ढाल के द्वारा हटा दिया जाएगा। यह तथ्य कि हमें एक दास के रूप में, एक कीट के रूप में, परमेश्वर की उपस्थिति में डरना होगा, हटा दिया गया है। परमेश्वर कहता है, मैं तुझे धर्मी ठहराऊंगा, तुझे मेरे साम्हने खड़े होने की आज्ञा दे। क्या आपको एहसास हुआ कि इन सबका क्रूस पर ध्यान रखा गया था?

आपको क्रूस के महत्व को समझने की आवश्यकता है। पौलुस ने गलातियों 6:14 में कहा, "मेरे लिए यह दूर हो कि मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के क्रूस को छोड़ किसी और बात पर घमण्ड करूं।" पॉल ने अपने अतीत में, अपने लेखन में या अपने अच्छे कार्यों में गौरव नहीं किया। उसने यीशु के जीवन के अन्य भागों में भी गौरव नहीं किया। उन्होंने कुंवारी जन्म में गौरव नहीं किया। वह इस पर विश्वास करता था, लेकिन उसने इसमें गौरव नहीं किया। उन्होंने शिक्षाओं में महिमा नहीं की। उसने चमत्कारों में महिमा नहीं की। उसने यह भी नहीं कहा कि वह पुनरुत्थान में गौरवान्वित है। उन्होंने कहा कि मैं जिस कारण से गौरवान्वित हूं, वह क्रॉस के कारण है, क्योंकि वह सब ठीक वहीं किया गया था।

4. हमारे पाप ने परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को नष्ट कर दिया। क्रूस पर, परमेश्वर ने विश्वास और आज्ञाकारिता के माध्यम से मनुष्य के लिए स्वयं को परमेश्वर के साथ मिलाना संभव बनाया। उसने दो चीजों को वापस एक साथ रखा जो अलग हो गई थीं जिन्हें कभी अलग नहीं होना चाहिए था। "उसके क्रूस पर बहे हुए लोहू के द्वारा मेल मिलाप करके, सब वस्तुओं का उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले, चाहे वे पृथ्वी पर की हों, चाहे स्वर्ग में की।" (कुलुस्सियों 1:20) "क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल

परमेश्वर से हुआ, फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे। केवल इतना ही नहीं, परन्तु हम परमेश्वर में आनन्दित भी होते हैं।" हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, जिसके द्वारा अब हमारा मेल हुआ है।" (रोमियों 5:10, 11)

कुरिन्थुस में मसीहियों को लिखे पत्र में पौलुस ने कहा, "अब सब कुछ परमेश्वर की ओर से है, जिसने यीशु मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल मिलाप कर लिया, और मेल मिलाप की सेवकाई हमें सौंपी है।" (2 कुरिन्थियों 5:18) इस मेल-मिलाप के दो बहुत, बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रयोग हैं!

1. परमेश्वर मेल मिलाप करनेवाला है और हम मेल मिलाप करनेवाले हैं। भगवान ने सब काम किया। यद्यपि वह कभी नहीं गया, फिर भी उसने हमें अपने साथ मिला लिया। वह वह नहीं है जिसने पाप किया है। वह पागल नहीं हुआ। वह वहीं रहा है जहां वह हमेशा रहा है। हम ही हैं जो भटक गए हैं। परन्तु उसने यीशु मसीह के क्रूस के द्वारा सब वस्तुओं का अपने साथ मेल कर लिया। हमने पाप किया। हम चले गए। हमने अपने हृदयों को कठोर कर लिया। हमने अपना बहाना बनाया। हम कंजूस हो गए। परमेश्वर बुला रहा है और खोज रहा है। उसने हमें दयनीय स्थिति में पाया और हमसे घर आने की विनती कर रहा था। लेकिन हमें उसे पहचानना चाहिए और उसकी पुकार सुननी चाहिए। "और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।" (फिलिप्पियों 2:8) इससे बढ़कर मेल-मिलाप की बात और क्या हो सकती है कि परमेश्वर ने देह धारण की, हमारे बीच में रहे, हमारे हाथों पीड़ित? उसने स्वयं को पूरी तरह से प्रलोभित होने दिया और पूरी तरह से पीड़ित होने दिया, यह आसान नहीं था, उस गर्वित, आडंबरपूर्ण, आत्म-धर्मी, जानने-समझने वाली भीड़ ने उसे उस धर्म के नाम पर क्रूस पर चढ़ा दिया जो उसने उन्हें दिया था। फिर उस सूली पर मरते समय यह कहते हुए, "पिता उन्हें क्षमा कर दो क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं।"

मुद्दा यह है कि, परमेश्वर ने वह सब कुछ किया जो उसे करना था इस तरह से कि हम उस क्रूस को देखें और कहें, ओह, वह हमसे कितना प्रेम करता होगा। आइए हम यूहन्ना 3:16 को देखने और इसे इतने हल्के ढंग से पढ़ने के लिए दोषी न बनें। "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया।" "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया (और दे दिया)।" हम उसे देखते हैं और मैं खुद से कहता हूं, वह कैसे मुझे वापस चाहता है। कैसे पिता चाहता होगा कि मैं स्वर्ग में रहूँ। और यदि आपने इसे पहले कभी इस तरह से नहीं देखा है, यदि आपने कभी भी उस प्रकाश में क्रॉस के बारे में नहीं सोचा है, तो इसे उस तरह से सोचें और उस क्रॉस की ओर आकर्षित हों। इसलिए यीशु ने कहा, यदि मैं ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो मैं सब मनुष्यों को अपनी ओर खींच लूंगा। यही मेल मिलाप है, परमेश्वर ने किया।

2. उसने हमें मेल-मिलाप की सेवकाई दी है। परमेश्वर मेल-मिलाप के आरोप का नेतृत्व कर रहा है। लूका 15 में परमेश्वर प्रेम करने वाला पिता है, जब वह उस लड़के को दूर से देखता है तो वह उसके पास दौड़ता है और उसे गले लगाता है। जब कोई व्यक्ति ऐसा करता है और यीशु के क्रूस पर पुत्र के रूप में परमेश्वर को देखता है, और उस पर विश्वास करता है, वर्तमान में जीवित जीवन से दूर हो जाता है और यीशु के अधिकार से बपतिस्मा लेता है, तो उनके पाप धुल जाते हैं और परमेश्वर की आत्मा उन्हें बदलकर काम पर जाओ। "पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में उंडेला गया है।" (रोमियों 5:5) संसार से कहो, देखो परमेश्वर तुम्हारे पीछे आया, देखो उसने तुम्हारे लिए क्या किया है। परमेश्वर धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रहा है और नहीं चाहता कि कोई नाश हो। सुलह सबसे खूबसूरत शब्दों में से एक है।अमेजिंग ग्रेस, लेसन # 1068 स्टीव फ्लैट, 1-5-1992

पिवत्रीकरण

पवित्रीकरण का अर्थ प्रक्रिया या अलग होने की स्थिति है। संयोग से, यह "पवित्र" शब्द के लिए एक ही मूल शब्द है। पवित्र का यही अर्थ है, इसका अर्थ है अलग होना। हम अक्सर इसे पूर्णता से जोड़ते हैं। हम पवित्रता के बारे में सोचते हैं जिसका अर्थ है कि कोई व्यक्ति पूर्णत: सिद्ध है। वर्षों से कुछ लोग जिन्होंने यह समझ लिया है कि पवित्रीकरण पवित्रता से बंधा हुआ है, उन्होंने सोचा है, "ओह, मैं ऐसा नहीं हो सकता।" शब्द को गलत परिभाषित न करें। आम तौर पर इसका मतलब अलग होना है।

अब शास्त्रों के अनुसार, इसका अर्थ एक पवित्र उद्देश्य के लिए धर्मनिरपेक्ष और पापी से अलग होना है। यदि आप बाइबल को पढ़ते हैं और उस शब्द को खोजते हैं, पवित्र करें, तो आप पुराने नियम में पाएंगे कि इसका उपयोग अक्सर दिनों और स्थानों और चीजों के लिए किया जाता था। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 2:3 में, परमेश्वर द्वारा आकाश और पृथ्वी की रचना करने के बाद, यह कहता है कि उसने सातवें दिन को "पवित्र" किया। उस ने उसको पवित्र ठहराया, उस ने उसको विश्रम के दिन के लिथे पवित्र ठहराया। मैं निर्गमन 29:43 के बारे में सोचता हूँ, तम्बू या मिलापवाले तम्बू का जिक्र करते हुए, परमेश्वर ने कहा "और वहाँ मैं इस्राएल के बच्चों से मिलूँगा, और निवास मेरी महिमा से पवित्र किया जाएगा"। लेकिन, समय के साथ पुरानी व्यवस्था ने अपना उद्देश्य पूरा कर लिया था और क्रूस पर यीशु के लहू ने मानवजाति के लिए एक नई वाचा खरीदी थी। "पवित्रीकरण" या "पवित्रीकरण" शब्द का प्रयोग

उदाहरण के लिए, पौलुस ने पियक्कड़ों और मूर्तिपूजकों और हत्यारों और समलैंगिकों और पापपूर्ण व्यवहार में शामिल सभी प्रकार के लोगों के बारे में बात करते हुए कहा, "और तुम में से कितने ऐसे थे। प्रभु यीशु और हमारे परमेश्वर की आत्मा के द्वारा।" (1 कुरिन्थियों 6:11) आप देखते हैं कि यह लोग थे जो पवित्र किए गए थे। या "अब शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; और तुम्हारा आत्मा, प्राण और शरीर हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक निर्दोष सुरक्षित रहें।" (1 थिस्सलुनीकियों 5:23) अब ये केवल दो उदाहरण

हैं। और भी बहुत कुछ हैं। परमेश्वर कह रहा है, ईसाई, मैं चाहता हूं कि तुम पवित्र हो जाओ, अलग हो जाओ। यह मेरी इच्छा है कि तुम पवित्र रहो, कि तुम अलग रहो, केवल एक दिन नहीं, केवल एक तम्बू नहीं, मैं चाहता हूं कि लोग पवित्र हों। यदि पवित्रीकरण का अर्थ है अलग किया जाना, किससे अलग किया जाना? क्यों? किस कारण के लिए?

अपनी सेवकाई के दौरान और पृथ्वी छोड़ने से पहले, यीशु ने अपने शिष्यों और उनके बाद आने वाले सभी लोगों के लिए प्रार्थना की। "मैं यह प्रार्थना नहीं करता कि तू उन्हें जगत से उठा ले, परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्ट से बचाए। जैसे मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं। अपने सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर। तेरा वचन।" सच है।" (यूहन्ना 17:15-17) अब इसका क्या अर्थ है? उन्हें अलग करो। वे दुनिया में हैं। वह परमेश्वर से उन्हें संसार से बाहर ले जाने के लिए नहीं कह रहा था, बल्कि सत्य के द्वारा उन्हें अलग कर रहा था। तब यीशु ने कहा, "जैसे तू ने मुझे जगत में भेजा है, वैसे ही मैं ने भी उन्हें जगत में भेजा है। और उनके लिये मैं अपने आप को पवित्र करता हूं, कि वे भी सत्य के द्वारा पवित्र किए जाएं" (पद 18, 19)। वह उनके लाभ के लिए कह रहा है, मैंने अपने आप को अलग कर लिया है ताकि वे भी अलग हो जाएँ। हमें संसार का नहीं होना चाहिए;

कुलुस्सियों 3:1-3 संसार की मूल्य व्यवस्था से अलग होने के संदेश को ग्रहण करता है। इसे देखो। "सो यदि तुम मसीह के साथ जिलाए गए हो, तो स्वर्ग की वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह परमेश्वर के दाहिने विराजमान है। अपना ध्यान पृथ्वी की वस्तुओं पर नहीं, पर स्वर्ग की वस्तुओं पर लगाओ। क्योंकि तुम मर गए, और तुम्हारा जीवन अब जीवित है।" परमेश्वर में मसीह के साथ छिपा हुआ है।"

जब बाइबल संसार के न होने की बात करती है, तो संसार के लिए यूनानी शब्द कॉसमॉस है। इसका मतलब यह नहीं है कि हमारा ग्रह। इसका मतलब यह नहीं है कि जमीन और पानी की यह बड़ी पुरानी गेंद जिसमें हम और आप रहते हैं। इसका मतलब ग्रह के लोगों से भी नहीं है। कॉसमॉस शब्द का अर्थ है मूल्य, इच्छाएं, उद्देश्य, आकांक्षाएं, इस ग्रह पर रहने वाले सभी लोगों की भावनाएं। यह मूल्य का वातावरण है जो चारों ओर से घेरे रहता है और जो हम पर दाएं और बाएं बमबारी करता है और हम अपनी आंखों और कानों से प्रतिदिन सांस लेते हैं। वह दुनिया है। यह कभी न भूलें कि चूंकि मनुष्य ने पाप किया था और उसे अदन की वाटिका से निकाल दिया गया था, इसलिए उसकी मूल्य प्रणाली पर अंधेरे के राजकुमार, स्वयं पुराने शैतान का प्रभुत्व रहा है।

1 यूहन्ना 2:16 के अनुसार, तीन चीजें हैं जो ब्रह्मांड, विश्व व्यवस्था पर हावी हैं। वे हैं a) मांस की वासना, b) आँखों की वासना और c) जीवन का अभिमान। यही संसार का संदेश है और यह आपको परमेश्वर से दूर करने का प्रयास कर रहा है। इन तीन चीज़ों से पवित्रीकरण को अलग किया जा रहा है, उनके क्षणिक सुखों में नहीं फँसाया जा रहा है। ओह, हमें उनके बीच में रहना होगा और उनकी अपील से बमबारी करनी होगी (उन्हें देखकर, उन्हें सुनना, उनके बारे में पढ़ना, लेकिन उनकी अपील से मूर्ख नहीं बनना)। उनकी मूल्य प्रणाली हमारी मूल्य प्रणाली नहीं होगी जो हमें दुनिया से अलग करती है क्योंकि हमारी जीवन शैली भगवान की इच्छा के अनुरूप है और हमारा स्नेह भगवान की चीजों पर है।

पवित्रीकरण कैसे होता है? एक आम धारणा यह है कि हम अपने धैर्य, दृढ़ संकल्प, दृढ़ता और कानून के पालन से खुद को पवित्र करते हैं। हम अपने को पवित्र करते हैं। हम अपने आप को अलग कर लेते हैं। ठीक है, बाइबल यह नहीं सिखाती है। बाइबल सिखाती है कि किसी भी मनुष्य ने व्यवस्था का पूरी तरह से पालन नहीं किया है और अपने आप को पाप से अलग नहीं किया है। पवित्रशास्त्र सिखाता है कि हम मसीह के रक्त और पवित्र आत्मा की शक्ति के माध्यम से परमेश्वर द्वारा पवित्र, अलग या पवित्र हैं। "वह [यीशु] लोगों को अपने लहू से पवित्र कर सकता था, फाटक के बाहर दुख उठाया।" (इब्रानियों 13:12) "क्योंकि पवित्र करनेवाला और जो पवित्र किए जाते हैं, सब एक ही से हैं, इसी कारण वह उन्हें भाई कहने से नहीं लजाता।" (इब्रानियों 2:11) पवित्रता का तत्व वही है जिस से हमारा प्रायश्चित हुआ, वही जिस से हमारा प्रायश्चित्त हुआ है। वही है जिस ने हमें धर्मी ठहराया है, और वही है जो हमारा मेल मिलाप करता है और हमें पवित्र भी करता है। यह यीशु का लहू है।

पवित्रीकरण की शक्ति रक्त है। शास्त्र में समान रूप से स्पष्ट पवित्रीकरण, पवित्र आत्मा का एजेंट है। "परन्तु हे भाइयो, जो प्रभु के प्रिय हैं, तुम्हारे विषय में हमें सर्वदा परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर ने आदि ही से तुम्हें चुन लिया, कि आत्मा के द्वारा पवित्र होकर, और सत्य पर विश्वास करके उद्धार पाओ।" (2 थिस्सलुनीकियों 2:13) वह वचन कहता है कि पवित्र आत्मा एजेंट है, आत्मा का पवित्रीकरण कार्य है। जब लोग मसीह के पास आते हैं तो वे स्वयं को अलग नहीं करते हैं, यह रक्त की शक्ति और पवित्र आत्मा की शक्ति के माध्यम से होता है। तो ऐसा कब होता है, यह तब होता है जब कोई ईसाई बन जाता है।

1 पतरस 1:2 में, पतरस परमेश्वर के चुने हुए लोगों के बारे में बात कर रहा है, जिन्हें यीशु मसीह की आज्ञाकारिता के लिए आत्मा के पवित्र करने के कार्य के द्वारा परमेश्वर पिता के भविष्य ज्ञान के अनुसार चुना गया है।

पॉल ने कहा कि उन्हें चुना गया था "कि मैं अन्यजातियों के लिए यीशु मसीह का सेवक हो सकता हूं, परमेश्वर के सुसमाचार की सेवा कर सकता हूं, कि अन्यजातियों की भेंट स्वीकार्य हो सकती है, पवित्र आत्मा द्वारा पवित्र।" (रोमियों 15:16) जब वह मसीह के पास आया तो

उसने अपने आप को अलग नहीं किया, वह लहू की शक्ति और पवित्र आत्मा की शक्ति के द्वारा अलग किया गया था। यह तब होता है जब कोई सुसमाचार का पालन करता है और ईसाई बन जाता है। "परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए, और पवित्र हुए, और धर्मी ठहरे।" (1 कुरिन्थियों 6:11) यह सब तब हुआ जब आपने सुसमाचार का पालन किया। आप धोए गए हैं, आप अलग किए गए हैं, आप धर्मी ठहराए गए हैं और परमेश्वर का आत्मा जो आपको अलग करता है, आपको अलग रहने के लिए सशक्त करेगा यदि आप उसे रहने देते हैं। लेकिन आप अपने पवित्रीकरण को त्यागने का अधिकार रखते हैं।

हां हम उस अधिकार को छोड़ना चुन सकते हैं। "इसलिये जो समझता है, कि मैं स्थिर हूं, वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े।" (1 कुरिन्थियों 10:12) "क्योंकि सत्य की पहिचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान बूझकर पाप करते रहें, तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकी नहीं।" (इब्रानियों 10:26) जब आप एक ईसाई बन जाते हैं, तो परमेश्वर आपको दुनिया से अलग कर देगा और आप तब तक अलग रहेंगे जब तक आप दुनिया में वापस जाने का चुनाव नहीं करते। ये शास्त्र इस सिद्धांत का समर्थन नहीं करते हैं कि "एक बार बचाए जाने पर हमेशा के लिए बचाया जाता है" या ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे आप अपने उद्धार को खो दें। परमेश्वर ने आपको जो दिया है उसका त्याग न करें जो पूरी दुनिया से अधिक मूल्य का है।

लेकिन मुझे पवित्र क्यों होना चाहिए? यदि परमेश्वर का लहू मुझे पाप से शुद्ध करता है, तो इससे क्या फर्क पड़ता है कि मैं बस आगे बढ़ूँ और पाप करता रहूँ या नहीं? यही सवाल रोमियों 6 में पूछा गया था, जहां दो हजार साल पहले रोम में कुछ ईसाई कह रहे थे, आप जानते हैं कि अगर यीशु का खून साफ करता रहता है तो क्यों न सिर्फ पाप का आनंद लें, इसे सब कुछ साफ करने दें। रोमियों 6:1 में, पौलुस कहता है, "परमेश्वर न करे।"

ब्रह्मांड, विश्व मूल्य प्रणाली का पालन न करने का कारण यह है कि हमें परमेश्वर को सम्मान देना है। "क्योंकि परमेश्वर की इच्छा, तुम्हारा पवित्रीकरण यह है, कि तुम व्यभिचार से बचे रहो, कि तुम में से हर एक पवित्रता और आदर के अपने पात्र को रखना जाने।" (1 थिस्सलुनीकियों 4:3-4) आप देखते हैं कि जब हम उस तरह से जीते हैं जिस तरह से जीने के लिए परमेश्वर ने आपको बुलाया है तो इससे परमेश्वर का आदर होता है। "क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिये अपनी देह के द्वारा, जो परमेश्वर के हैं, परमेश्वर की महिमा करो।" (1 कुरिन्थियों 6:20)

दूसरा कारण यह है कि हम परमेश्वर के दूत हैं। (2 कुरिन्थियों 5:20) हम मसीह को एक ऐसे संसार को कैसे दिखाएंगे जो खाली और खोखली जीवन शैली में जी रहा है, ब्रह्मांड, संसार की खोज कर रहा है? अगर हम उसी ड्रमर की ताल का अनुसरण कर रहे हैं तो हम उन्हें किस तरह से किसी चीज़ की ओर इशारा करने जा रहे हैं? हम नहीं कर सकते। आप नहीं कर सकते। मैं नहीं कर सकता। आप मसीह के लहू और आत्मा की शक्ति के द्वारा अलग किए गए हैं। यदि आप अलग हो जाते हैं, तो दुनिया उसे देखती है। यह कुछ ऐसा है जो उद्देश्यहीन दुनिया वास्तव में नहीं चाहती। मसीह के एक राजदूत के रूप में, मैं उस पवित्रता को खोने का साहस नहीं कर सकता जो उसने मुझे दिया है। यह वास्तव में एक भयानक, पुराना, सूखा, धूल भरा उपदेशक शब्द नहीं है, है ना? चलो अलग हो जाते हैं। यदि आप उस बुलाहट के आगे झुक जाते हैं तो परमेश्वर आपको एक समृद्ध और पूर्ण आध्यात्मिक जीवन देगा।

इस संसार के मूल्यों के अनुरूप न होकर हम एक ऐसे संसार को दिखाते हैं जो जीवन के एक खाली और खोखले तरीके से जी रहा है, जीवन का एक बेहतर, पूर्ण और समृद्ध तरीका है जिसमें मसीह यीशु में अनंत जीवन की आशा है। परमेश्वर ने हमें जो पवित्रता प्रदान की है, उसे खोने का साहस न करें।

अमेजिंग ग्रेस लेसन # 1070 स्टीव फ्लैट से अनुकूलित